Светлана Васильевна САВИЦКАЯ

ГОРОД ДОМОВ
И ГОРОД ХРАМОВ

মন্দিরের শহর - ঘর বাড়ির শহর

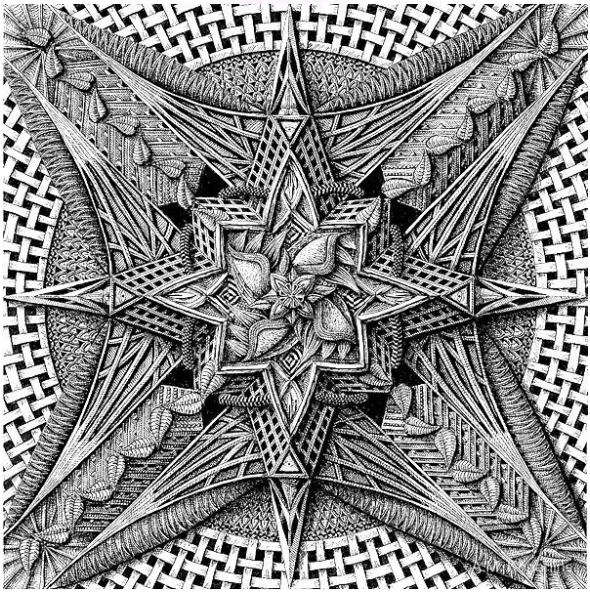

(притчи, выбранные в ИНДИИ)

ЭНЦИКЛОПЕДИЯ ЗОЛОТОГО ПЕРА

МОСКВА – КАЛЬКУТТА 2014

«ГОРОД ДОМОВ И ГОРОД ХРАМОВ»

Светлана Васильевна Савицкая

মন্দিরের শহর - ঘর বাড়ির শহর

ISBN 978-5-7793-2030-7

УДК 85.5:745.5
ББК 85.12
К89

«Город домов и город храмов» - книга-размышление, которая уходит за пределы привычного сознания. Ее перевод на бенгали яился некоторой сенсацией. Довести притчи до читателей Индии выразил готовность Университет им. Рабиндраната Тагора в Калькутте. Из 500 сказок и притч были выбраны 23.

Писатель Светлана Васильевна Савицкая известна во многих городах России. Ее произведения переведены на 12 языков мира, и снискали популярность среди читателей всех возрастов.

© Светлана Васильевна Савицкая
© Перевод Мадхаби Бхатачарья
и Гаутам Гош

Издание осуществлено при содействии компании АРГО

ЭНЦИКЛОПЕДИЯ ЗОЛОТОГО ПЕРА

МОСКВА – КАЛЬКУТТА 2014

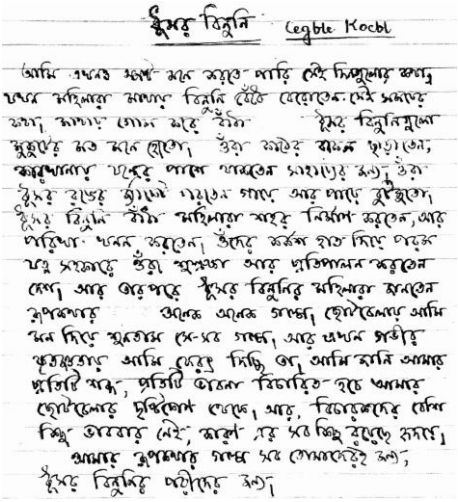

СЕДЫЕ КОСЫ

Я ещё помню те времена, когда женщины с косами ходили. Седыми косами, уложенными короною на голове. Те женщины убирали хлеб, валили лес, стояли на заводе у станка. Они носили серые телогрейки и сапоги.

Женщины с седыми косами возводили города, строили каналы. Они на своих грубых руках нежно вынянчили и выпестовали страну.

А ещё женщины с седыми косами знали много сказок. Они передавали мудрость, накопленную годами. И в детстве я жадно слушала. А теперь с благоговением передаю новым пополкниям то, что собрала за свою жизнь. Я знаю, каждое слово мое, каждая мысль оценивается строгими судьями моего детства. И нет ничего справедливее этого жюри. Потому что оно в сердце.

Мои сказки для вас, Ангелы с седыми косами на голове!

НАКОМОДНЫЕ СЛОНИКИ

Никакого сладу не было с маленькой шалуньей Лёськой. Пришлось матери как следует отшлёпать хулиганку, и запереть в дальнюю комнату коммунальной квартиры, которая полгода пустовала.

Лёська долго барабанила в запертую дверь, потом поняла, что это бесполезно и решила обследовать незнакомую часть дома.

Комната оказалась захламленной старыми вещами и мебелью. Сквозь пыль пробивался запах лаванды и шалфея, а сквозь дырки нестиранной тюли – нежный свет первого снега.

Лёська открыла шкаф, достала черный бархатный капор, прикинула его у зеркала, затем набросила на узкие плечи вязанную тяжелую шаль и накрасила губы жирной красной помадой.

Теперь Лёська походила на маленькую старушку, которая когда-то жила здесь.

Шалунья еще не умела читать, поэтому корешки старинных книг, из-за которых собственно, не могли никак поделить комнату наследники, не произвели на Лёську никакого впечатления. Зато взгляд её остановился на массивном комоде, где по длинной салфетке маршировали девять мраморных белых статуэток.

- Слоники! – радостно запищала Лёська и полезла на кресло, чтобы их достать.

Резная ножка кресла пошатнулось. Лёська уцепилась за салфетку и полетела на пол, увлекая мраморных слоников за собою. Всех девятерых.

И тут, ударяясь об пол, слоники заверещали как живые:

- Ай! Ой! Больно!

Лёська легла на теплый ковер и построила их перед собою.

- Вы откуда? – спросила шалунья.

- Из Индии, - ответил самый большой слоник, - Мы здесь давно стоим. На счастье.

- Бедные! Вам не скучно?

অথ হস্তী পুরানকথা ---

- রুশলেখিকা - স্বেতলানা সাভিতস্কায়া
- বঙ্গানুবাদ - গৌতম ঘোষ

না, লিওস্কাকে নিয়ে আর পারা যায় না। শেষ পর্যন্ত আর না পেরে নাস্তানাবুদ হয়ে দুষ্টুটাকে আচ্ছা করে পিটিয়ে মা তাকে আটকে রাখল ফ্ল্যাটবাড়িটার পিছন দিককার একটি ঘরে। আনেক দিন ধারে খালি ছিল সেটা।

বন্ধ দরজায় অনেকখন ধাকাধাক্কি করার পর লিওস্কা বুঝতে পারল বৃথাই চেষ্টা করছে সে। অবশেষে সে স্থির করল বাড়ির এই বন্ধ হয়ে থাকা ঘরটাকে সরেজমিন তদন্ত করার।

ঘরটার সর্বত্র পুরনো দিনের আসবাবপত্র আর বাতিল হয়ে যাওয়া সরঞ্জাম ছড়ান ছেটানো রয়েছে। ল্যাভেন্ডার আর পুরান স্যাঁতস্যাঁতে গন্ধ ধুলোয় মাখামাখি করে রয়েছে গোটা ঘরটায়। না কাচা পুরানো পর্দার লেসের ফুটো দিয়ে দেখা যাছে প্রথম বরফপাত।

লিওস্কা বাসনপত্র রাখার আল্মারিটা খুলে বার করল কাল রঙের ভেলভেটের মাথার উড়নি আর ছুড়ে দিল তা আয়নার দিকে, তারপর তার ছোটো কাঁধের উপর চাপিয়ে দিল মোটা ভারি করে বোনা একটা গায়ে দেবার শাল, তার ঠোঁট দুটোকে রাঙিয়ে নিল তেলতেলে লাল ওষ্ঠরঞ্জনিতে (Lipstick)।

আনেকদিন আগে এখানে বাস করা খর্বাকৃতি বৃদ্ধা ঠাকুরমার মতো মনে হল লিওস্কাকে। ছোট্টো দুষ্টুটা কিন্তু তখনও পড়াশোনা করতে জানত না। তাই ঘরে পরে থাকা পুরান বইপত্রের মলাটের প্রতিও আকর্ষণ অনুভুত হল না, যে গুলোর কোন ভাগিদার না থাকায় পড়ে ছিল এই উত্তরাধিকারহীন এই ঘরটায়।

- Скучно, - ответил слоник поменьше, - у нас ведь тоже есть мечты, но никто никогда не спрашивал нас об этом.

- А чего бы ты хотел?

- Денег!

-Тоже мне, мечта! – засмеялась Лёська, - разве о деньгах мечтают? Мечтают о любви!

- Я мечтаю о любви, - воскликнул третий слоник.
- А ты? – спросила она четвертого.
- Я люблю поесть, - признался тот.
- А я – музыку.
- Я – женщин.
- Знания.
- Славу.
- А ты, самый большой? Чего ты хочешь?

- Нас девять, - ответил самый большой слоник, - это священное число, за ним начинается новый жизненный цикл. Поэтому многие годы мы исполняли чужие желания. Но, если ты, милое дитя, хочешь сделать нам что-то хорошее, подумай о пристрастиях каждого. Я же хочу хоть одним глазком увидеть далекую нашу Индию.

В это время послышались шаги матери. Лёська быстро вытерла губную помаду, сбросила капор и шаль, а слоников спрятала в кармашек.

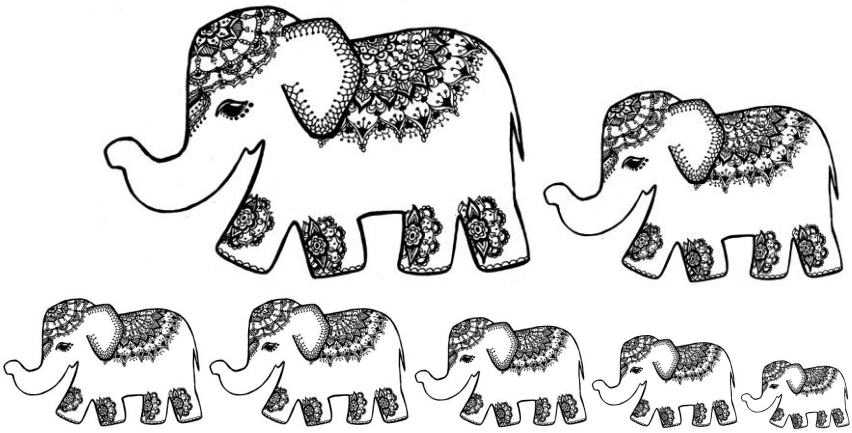

Когда все заснули, Лёська вылезла из-под одеяла, и отправилась расставлять слоников по своей квартире.

- Ты мечтаешь о любви, значит, будешь жить у Ольги. Они только что поженились, и любви у них хоть отбавляй! - произнесла Лёська рассудительно, поставив слоника на тумбочку молодоженов.

কিন্তু তার চোখ আটকে গেল বিরাট দেরাজটার দিকে যার মাথার লম্বা আচ্ছাদনের মাপ বরাবর রাখা ছিল নটা সাদা মূর্তি।

হাতি! খুশিতে চিঁ চিঁ করে উঠল লিওস্কা আর আরামকেদারার উপর উঠে পড়ল হামাগুড়ি দিয়ে ওগুলোকে পাবার জন্য। আরামকেদারার বেকান হাতল মটমট করে ভাঙতেই দেরাজের মাথার আছাদানি ধরে ক্রমক্রমে ঝুলতে ঝুলতে লিওস্কা পপাত-ধরণীতলে হুড়মুড় করে, আর মর্মর প্রস্তরের হাতিগুলোও তার সঙ্গে। ন - নটাই একসঙ্গে।

আর মাটিতে পড়তেই হাতিগুলো জীবন্ত হয়ে উঠল।

আঃ ! ওহ! উহ! কি ব্যথা।

পুরনো উষ্ণ কারপেটের উপড় পড়ে থাকা হাতিগুলিকে লিওস্কা একে একে তার সামনে এনে রাখল।

জিজ্ঞেস করল দুষ্টুটা, কোথা থেকে এসেছ তোমরা?

সবচাইতে বড় হাতিটা জবাব দিল - ভারতবর্ষ থেকে। আমরা অনেকদিন এখানে দাঁড়িয়ে রয়েছি। সুখ আর সৌভাগের জন্য।

আহা বেচারারা ! ক্লান্ত হওনি তোমরা?

ক্লান্ত খুবই ক্লান্ত - সব চাইতে ছোটটা বলে উঠল। আমাদেরও কিন্তু নিজেদের স্বপ্ন আছে, কিন্তু কেউ কখনও আমাদের কাছ থেকে জানতে চায়নি সে সব কথা।

আর তুমি কি চাও?

অর্থ, টাকা। আমারও স্বপ্ন আছে! মুচকি হেসে লিওস্কা বলল, আমি কি অর্থের স্বপ্ন দেখি, টাকার স্বপ্ন?

- Тебе жить на кухне, тебе – на пианино. А тебе в спальне сестер. Ты теперь будешь стоять на полке с книгами. Ты?

Лёська подумала, куда же определить слоника, который любит славу, и, пробравшись на цыпочках в комнату писателя, поставила его прямо на рабочий стол.

- Дядя Слава непременно напишет о нем сказку, - подумала она.

В комнату нумизмата она отнесла того слоника, который мечтал о деньгах…

На следующий день она напросилась с матерью на рынок. Терпеливо, как никогда, Лёська ходила за ней хвостом среди развалов одежды и обуви. И даже позволяла примерять на себя платки и кофточки. Она знала, что после китайцев и корейцев мать обязательно подойдет к индусам. И мать подошла.

আমি ভালবাসার স্বপ্ন দেখি -তৃতীয় হাতিটা বলে উঠল ।

আর তুমি? চতুর্থ হাতিটাকে জিজ্ঞেস করল লিওস্কা ।

আমি খেতে খুব ভালবাসি, - অকপট স্বীকারোক্তি তার।

আর আমি - সঙ্গীত।

আমি - মেয়েদের।

জ্ঞান - বলল অপরজন ।

যশ, গৌরব - অন্যজন।

আর তুমি জ্যেষ্ঠ? তুমি কি চাও?

আমারা ন জন জবাব দিল জ্যেষ্ঠজন। এটা একটা পবিত্র সংখ্যা । এর পরেই শুরু হয় নতুন জীবন চক্র। আর তাই দীর্ঘকাল ধরেই আমরা অন্যের ইচ্ছে পূরণ করে আসছি। আর তুমি খুদেসোনা, সত্যিই যদি তুমি আমাদের ভাল চাও, আমাদের ইচ্ছে পূরণ করতে চাও, তাহলে তোমাকে বলি, বহুদূরের আমাদের দেশ ভারতবর্ষটাকে একবার চোখে দেখতে চাই।

এমন সময় মায়ের পায়ের শব্দ শোনা গেল। লিওস্কা তাড়াতাড়ি মুছে ফেলল ঠোঁটের লিপস্টিক। ছুঁড়ে ফেলল গায়ের শাল, মাথার উড়নি। আর ঝটপট লুকিয়ে ফেলল হাতিগুলোকে তার পকেটে। রাতে যখন সবাই ঘুমিয়ে পড়েছে মুড়ি দেওয়া কম্বলের ঢাকনা খুলে বেড়িয়ে এসে হাতিগুলোকে সুন্দর করে সাজিয়ে রাখল লিওস্কা তাদের ফ্ল্যাটের কামরায় ।

তুমি স্বপ্ন দেখ ভালবাসার, তাই তুমি থাকবে ওল্লাদের সঙ্গে। সবে বিয়ে হয়েছে ওদের , ভালবাসার দরকার ওদের সবচাইতে বেশী। বিজ্ঞের মত বলল লিওস্কা। আর ভালবাসার হাতিটাকে সে রেখে দিল সদ্যবিবাহিতদের রাত্রিবাসের সারঞ্জাম রাখার তাকে ।

- Дяденька! Вы из Индии?- спросила Лёська продавца в чалме.

- Да.

- Отвезите пожалуйста моего слоника домой!

- Хорошо, - сказал индус, широко улыбаясь, и принял белый подарок в свою смуглую ладонь.

Теперь у Лёськи оставался один, самый маленький слоник, который ничего не успел сказать.

আর তুমি থাকবে রান্নাঘারে , আর তুমি পিয়ানোর উপরে। আর তুমি থাকবে বোনেদের শোবার ঘরে । এখন থেকে তুমি থাকবে বইপত্তরের তাকে। আর তুমি?

লিওস্কা ভাবতে থাকল যশ আর গৌরব যার স্বপ্ন তাকে রাখবে কোথায়?

পা টিপে টিপে লিওস্কা ঢুকল লেখকের ঘরে, সন্তর্পণে বসিয়ে দিল তাকে লেখকের লেখার টেবিলে।

স্লাভা কাকু নিশ্চয়ই একটা গল্প লিখবে তাকে নিয়ে ভাবল লিওস্কা।

মুদ্রাসংগ্রাহকের ঘরে সে নি[illegible]গেল, রাখল সেই হাতিটাকে , যেটা স্বপ্ন দেখত অর্থ বা মুদ্রার।

পরের দিন লিওস্কা বাজারে গেল মার সঙ্গে। কখনও সে যা করেনি এবার কিন্তু একেবারে তার উল্টো। কোন দুষ্টমি নয় , বায়না নয়, এদিক ওদিক ছিটকে যাওয়া নয়, লক্ষ্মী মেয়ের মতন মায়ের পেছন পেছন একেবারে একটা লেজের মতন মায়ের সঙ্গে সঙ্গে । অগোছালো ডাঁই করে রাখা পোশাক আশাক, জুতো -চটি এমন কি মাথার রুমাল বা সোয়েটারও গায়ে চড়িয়ে দেখতে আপত্তি করল না লিওস্কা। লিওস্কা জানত চিনা ও কোরীয়দের পর মা নিশ্চিত ঢুকবে ভারতীয়দের দোকানে । আর সতিই মা গেলও তাই।

কাকু! আপনি ভারতবর্ষ থেকে এসেছেন? পাগড়ীওয়ালা লোকটাকে জিজ্ঞেস করল লিওস্কা।

হ্যাঁ -মা।

দয়া করে আমার হাতীটাকে আপনার সঙ্গে করে ওর বাড়িতে নিয়ে যাবেন?

চমৎকার! হাসিমুখে বললেন ভারতীয়টি আর শ্বেতশুভ্র উপহারটি গ্রহণ করলেন তাঁর গমরাঙ্গা হাতের পাতায়।

Как ни просила его девочка, как ни уговаривала, тот не проронил ни звука.

- Ты – самый маленький. И я – самая маленькая в нашей квартире, - сказала ему Лёська, укладывая его рядом на подушку, - поэтому я оставлю тебя себе. Но ты не беспокойся. Если ты чего-нибудь очень-очень захочешь, я обязательно исполню любое твое желание. Только скажи! Я сама буду твоим счастливым слоником.

И она уснула. А самый маленький слоник лежал рядом и хитро улыбался. На самом деле это он приносил счастье. И то, что Лёська оставит его себе, он не только знал, но и очень хотел этого.

লিওস্কার হাতে রইল মাত্র আর একজন। সবচাইতে ক্ষুদে হাতীটি। যে কিছুই বলে উঠতে পারেনি।

কত রকমভাবে লিওস্কা জানতে চাইল তাঁর মনের কথা, তাঁর স্বপ্নের কথা,কিন্তু সে একটা কথাও বলল না।

তুমিও সবচাইতে ছোট, আর আমিও বাড়ির সবচাইতে ছোট, লিওস্কা বলল তাকে, কাছে টেনে বালিশের উপর বসিয়ে। আর তাই তুমি থাকবে আমার সঙ্গে,আমার কাছে, রেখে দেব তোমাকে। তুমি ভয় পেওনা, বিরক্ত হয়োনা। তুমি যদি কখনও কিছু চাও, কিছু পেতে ইচ্ছে করে তোমার, আমি তা এনে দেব তোমায়।

কিন্তু তুমি কিচ্ছু তো বলো।

আমি নিজে হব তোমার সৌভাগ্যদায়ী হাতি।

ঘুমিয়ে পড়ল লিওস্কা এরপর, পাশে শুয়ে থাকা ছোট্ট হাতিটা হাসল দুষ্টুমি ভরা হাসি। আসলে এই ছোট হাতিটাই ছিল সুখ আর সৌভাগ্যের বাহন। সে জানত লিওস্কা রেখে দেবে তাকে নিজের কাছে, সেটাই শেষ ক থা নয়, সে নিজেও খুব চেয়েছিল লিওস্কারই কাছে থেকে যেতে।

ГОРОД ХРАМОВ И ГОРОД ДОМОВ

Ни на небе, и ни на море, а на нашей земле разделяла река два города. В одном жители с утра до вечера гнули спину чтобы сажать деревья, растить сыновей и строить дома. И он назывался город Домов. А в другом каждый житель проживал в храме, и там молился, чтобы попасть в рай. И город назывался город Храмов.

Жители города Храмов никогда не были в городе Домов. А жители города Домов не пересекали реку, чтобы попасть в храмы и помолиться. Так после смерти одни попадали в рай, а другие, соответственно в ад.

Захотелось как-то одному из жителей города Домов посмотреть, а что там, за рекою. Прошел он по безлюдному мосту, и увидел великолепный храм, постучал, и ему открыли двери. Человек удивился богатству, и услышал, как священник молится, чтобы попасть в рай.

- Помолись и за меня, - попросил житель города Домов.

- Хорошо, - ответит хозяин первого храма, принеси денег, тогда я помолюсь за тебя.

Вернулся житель в город. Зашел к соседу и забрал деньги. Принес в храм.

- Ты грешен? – спросил хозяин храма.

- Да. Я грешен! – ответил человек. – Я украл деньги у своего соседа, потому что свои истратил на сад, детей и дом.

- Я помолюсь за тебя, и ты после смерти окажешься в раю.

Обрадовался житель города домов. И на следующий день он обманул еще одного соседа. И понес его деньги в соседний храм, который находился рядом. И увидел, как другой священник другого храма молится, чтобы попасть в рай.

- Помолись и ты за меня, - попросил житель города Домов.

মন্দিরের শহর - ঘর বাড়ির শহর

স্বর্গেও নয়, সমুদ্র গভীরেও নয়, এমনকি আমাদের মর্ত্যভূমিতেও নয়, নদীটা ভাগ করে দিয়েছিল দুটো শহরকে দুই পাড়ে। একদিকের অধিবাসীরা সকাল থেকে সন্ধ্যে পর্যন্ত পরিশ্রম করত গাছের চারা রোপন ও পরিচর্যায়, নিজেদের সন্তানদের লালন-পালন করতে আর ঘর-গেরস্থালী সামলাতে ও বাড়ি ঘর তৈরি করতে। তাদের শহরকে বলা হতো বাড়ি-ঘরের শহর। আর অপরদিকে, প্রত্যেক অধিবাসী বাস করতো মন্দিরে, তারা প্রত্যহ প্রার্থনা করতো যাতে তারা স্বর্গে যেতে পারে। তাদের শহরকে বলা হতো মন্দিরের শহর।

মন্দির শহরের অধিবাসীরা কোনোদিনই ঘর-বাড়ির শহরে যায়নি। আর ঘর-বাড়ির শহরের অধিবাসীরাও কোনোদিন নদী পার হয়নি। আর, তাই তারা না ঢুকেছে মন্দির শহরে আর না করতে পেরেছে প্রার্থনা। আর তাই মৃত্যুর পর কেউ কেউ পৌঁছলেন স্বর্গে আর যথাক্রমে অন্যরা গেলেন নরকে।

ঘর-বাড়ির শহরের এক অধিবাসীর একবার ইচ্ছে হল নদীর অপর পাড়ে কি আছে দেখবার। জনশূন্য সেতু পেরিয়ে নদীর অন্য পাড়ে পৌঁছল সে আর দেখতে পেল জাঁকালো এক মন্দির। দরজায় নাড়া দিতেই খুলে গেল দরজা তার সামনে। বিস্মিত হল সে মন্দিরের ঐশ্বর্য দেখে, শুনতে পেল পুরোহিত কিভাবে প্রার্থনা করেছে স্বর্গে পৌঁছানোর জন্য।

আমার জন্য প্রার্থনা করুন দয়া করে -- ঘর বাড়ির শহরের মানুষটি

- Хорошо, - ответит хозяин второго храма, - дай и мне денег, тогда и я помолюсь за тебя.

Житель города Домов отдал служителю храма деньги другого соседа. И тот помолился за него.

- Я помолился, и после смерти ты обязательно окажешься в раю.

অনুরোধ করল।

বেশ। প্রথম মন্দিরের অধিকারী বললেন, এর উত্তরে। তিনি বললেন, আগে অর্থ নিয়ে এসো, তারপর আমি তোমার জন্য প্রার্থনা করব।

ঘর-বাড়ির শহরের লোকটি তার শহরে ফিরে এলো। সে গেল তার প্রতিবেশীর কাছে আর নিয়ে এল অর্থ সেখান থেকে। পৌঁছল মন্দির শহরের মন্দিরে।

মন্দিরের অধিকারী জিজ্ঞেস করলেন তাঁকে -- তুমি কি পাপী?

ঘর-বাড়ির শহরের লোকটি বলল, হ্যাঁ আমি পাপী। আমি আমার প্রতিবেশীর অর্থ চুরি করেছি। কারণ আমার নিজের সমস্ত অর্থ ব্যয় করেছি আমি গাছ, সন্তান আর গৃহের জন্য।

আমি তোমার জন্য প্রার্থনা করব, মৃত্যুর পর তুমি স্বর্গে পৌঁছে যাবে।

পরের দিন ঘর-বাড়ির শহরের লোকটি অপর এক প্রতিবেশীকে প্রতারিত করলো, আর সেখান থেকে জোগাড় করা অর্থ নিয়ে উপস্থিত হল পাশের মন্দিরে। দেখলো সে কেমন করে এই মন্দিরের পুরোহিতও স্বর্গে পৌঁছনোর জন্য প্রার্থনা করেছে।

ঘর-বাড়ির শহরের লোকটি এই পুরোহিতটিকেও অনুরোধ করল তার জন্য প্রার্থনা করতে।

দ্বিতীয় মন্দিরটির পুরোহিতও বলল, বেশ আগে তুমি আমাকে অর্থ দাও

Это привело жителя города Домов в полный восторг. Теперь вместо того, чтобы сажать деревья, растить сыновей и строить дома, он стал обманывать соседей и приносить деньги на содержание новых и новых храмов соседнего города.

Когда он обокрал всех своих соседей, им не на что стало жить. Они стали умирать. И постепенно в городе Домов не осталось ни одного жителя, кроме вора. Зато он посетил все храмы, и каждый из священников помолился о его грешной душе,

заверив, что место в раю над каждым из храмов тому обеспечено.
Наконец, и эта душа, устав грешить отошла в мир иной.
И что же увидел житель города Домов? Все его соседи попали в ад, и продолжали сажать деревья, наставлять сыновей и строить дома, но уже в аду.
Через небесную реку над городом Храмов стоял точно такой же город Храмов, но только уже в раю. И каждый из священников, вымолив себе теплое место, продолжал молиться.
Двери храмов в раю отворялись перед вором, и каждый священник звал к себе:
- Заходи! Теперь ты можешь жить здесь бесконечно и бесконечно со мною молиться!
Но почему-то человеку стало не по душе. Ни в одном из храмов не находил он покоя. Он пересек священную реку, и оказался в аду.
Но жители ада города Домов закрывали пред ним калитки, не желая разговаривать.
Даже в собственном доме не нашел человек понимания.

Тогда он сел на мосту меж адом и раем в ожидании прощения.

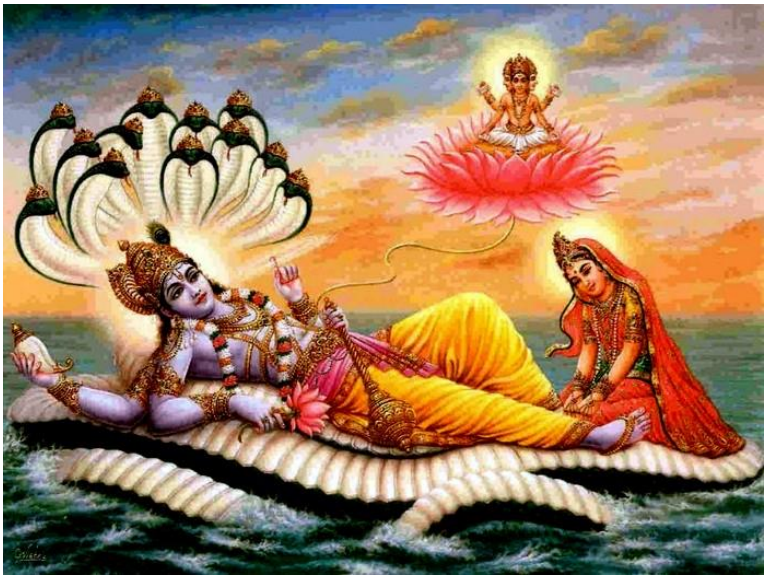

তারপর আমি তোমার জন্য প্রার্থনা করবো।

ঘর-বাড়ির শহরের লোকটি মন্দিরের সেবাইত এর হাতে তুলে দিল দ্বিতীয় প্রতিবেশীর কাছ থেকে হাতানো অর্থ, আর অর্থ পেয়ে দ্বিতীয় সেবাইত প্রার্থনা করলো তার জন্য। বললো, আমি তোমার জন্য প্রার্থনা করেছি। মৃত্যুর পর নিশ্চিত তুমি স্বর্গে পৌঁছে যাবে।

ঘর-বাড়ির শহরের লোকটি খুশিতে ডগমগ হয়ে উঠলো। এরপর থেকে বৃক্ষ রোপন, সন্তান পালন বা গৃহ নির্মাণ কোনো কিছুই না করে শুরু করলো আর চালিয়ে যেতে থাকলো প্রতিবেশীদের ঠাকানো আর প্রতারণার ফন্দী ফিকির আর হাতানো অর্থ সম্পদ বিনিয়োগ করতে থাকল অপর পাড়ের প্রতিবেশী মন্দির শহরের নতুন নতুন মন্দির নির্মাণ আর সংরক্ষণের কাজে।

যখন নিজের শহরের সব প্রতিবেশীকে লুট করা সাঙ্গ হলো, যখন নিজের শহরের সবস্বান্ত প্রতিবেশীদের কিছুই আর অবশিষ্ট রইল না, তারা মরতে শুরু করলো। ক্রমে ঘর-বাড়ির শহরে তস্কর অধিবাসীটি ছাড়া আর কেউই বেঁচে রইলো না তারা মরতে শুরু করলো। তস্করটি যত মন্দির ছিল সব মন্দিরে গেল, আর সব মন্দিরের পুরোহিতই তার পাপী আত্মার জন্য প্রার্থনা শেষে তাকে জানালো যে প্রত্যেক মন্দিরের উর্দ্ধভাগে অবস্থিত স্বর্গস্থানে তার স্থান নিশ্চিত।

অবশেষে পাপ-ক্লান্ত তার আত্মা একদিন পাড়ি দিল অন্যজগতে -

পরলোকে।

আর ঘর-বাড়ির শহরের সেই লোকটি কি প্রত্যক্ষ করলো? সে দেখলো, তার নিজের শহরের সমস্ত প্রতিবেশীরা যারা ইতিমধ্যে স্থান পেয়েছে নরকে তারা সেখানেও রোপন করে চলেছে বৃক্ষ, প্রতিপালন করছে সন্তান সন্ততিদের আর নির্মাণ করে চলেছে বাসস্থান।

স্বর্গের নদীর অপর পাড়ে নিচের মতন উপরেও রয়েছে একই রকম মন্দির শহর, তবে স্বর্গে। আর প্রত্যেক মন্দিরের পুরোহিতই একই ভাবে প্রার্থনা ভিক্ষা করছে নিজেদের জন্য উষ্ণ আরামদায়ক স্থান লাভের আশায়। স্বর্গের মন্দিরগুলির দরজা খুলে যেতে থাকল তস্করটির সামনে আর প্রতিটি মন্দিরের পুরোহিতরাই তাকে ডাকতে থাকলো নিজের নিজের কাছে।

এসো এসো ভিতরে এসো। তুমি এখন নিশ্চিন্তে এখানে থাকতে পারবে। এসো আমার কাছে এসো - প্রার্থনা করো আমার সঙ্গে। কিন্তু কেন যেন লোকটির এ-সব কিছু ভালো লাগলো না। কোনো মন্দিরেই সে শান্তি খুঁজে পেলো না। নদী পেরিয়ে এল সে আর পৌঁছে গেল অপর পাড়ে, নিজেকে পেয়ে গেল সে নরকে।

কিন্তু নরকের ঘর-বাড়ির শহরের অধিবাসীরা দরজা বন্ধ করে দিল তার মুখের উপর। কেউ তার সঙ্গে বাক্যালাপও করতে চাইলো না।

এমন কি তার নিজের বাড়িরও কাউকে পেলোনা যে আর কথা শুনবে বা বুঝবে।

নিরূপায় হয়ে সে বসে পড়ল স্বর্গ আর নরকের মধ্যেকার সেতুর উপর ক্ষমার প্রত্যাশী হয়ে।

ভাষান্তর :

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ।

ЖЕМЧУЖНЫЕ БУСЫ

Подарила свекровь невесткам по нитке жемчуга.

Старшая подумала с досадой: «Вот ведь, старая ведьма, нашла что подарить, ведь жемчуг к слезам!» И забросила бусы в нижний ящик стола.

Средняя примерила обновку со всеми платьями, и решила, что жемчуг носить уже не модно. «Вот так, дарит всегда ерунду: нате вам Боже, что нам не гоже!» Но на всякий случай прибрала в шкатулку – а вдруг мода переменится.

Младшая невестка обрадовалась больше всех. Она уже месяц вышивала Богородицу, и жемчуга не хватало для её убора. Ловко распустив жемчужную нитку, она украсила свою работу и повесила в красный угол. Люди дивились: «Какое чудо, эта Богородица!» А невестка говорила: «Этот жемчуг подарила мне мама. Если бы не он, не смогла бы я закончить работу!»

По помыслам и награда вышла каждой невестке.

Старшей все не везло. С работой не ладилось. Соседи донимали. Не раз слезами умывалась.

У средней – ни шатко, ни валко. Никак. Перебивались с хлеба на квас. Не болели, и на том спасибо!

А младшая родила трёх сыновей. И радость они ей до сих пор и гордость. И подмога.

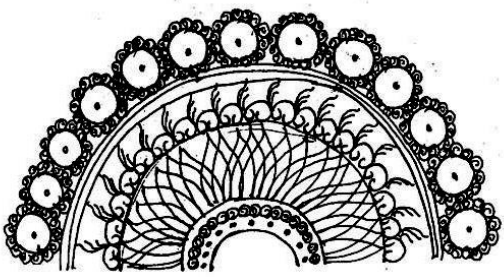

মুক্তো দানা

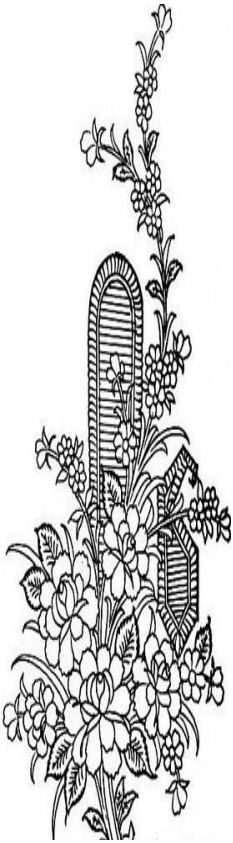

এক শাশুড়ী তাঁর বৌমাদের উপহার দিলেন মুক্তোর মালা প্রচুর বিরক্তি নিয়ে। বড় বৌমা ভাবলো, যাক শেষ পর্যন্ত ডাইনি বুড়ি ঠিক করতে পারলেন, কি উপহার দেবেন। যাই হোক, মুক্তো হল কান্নার জন্য। তাকে টেবিলের নিচের ড্রায়ারে রেখে দিল সে। মেজ বৌমা তার সব নতুন পোষাকের সঙ্গে মিলিয়ে দেখলো মুক্তোর ছড়া আর মনে করলো যে বর্তমান সাজগোজের সঙ্গে মুক্ত নিতান্তই অচল, বেমানান। সব সময়েই বুড়ি মনে করে অকেজো জিনিসই দিয়ে থাকে। অবশ্য হঠাৎই যদি আবার আদব-কায়দা পরিবর্তন হয় তবে কাজে লাগতে পারে ভেবে কৌটোয় রেখে দিল সে তার মুক্তো।

ছোট বৌমা খুব খশি। এক মাস ধরে সে ছুঁচের কাজে সাজিয়ে তুলেছিল দেবমাতার উষ্ণীষ। সবই ছিল তাতে কেবল কোন মুক্তো বাদে। দক্ষ হাতে মুক্তোর দানায় সুচারু ভাবে সাজিয়ে নিল উষ্ণীষ আর ঘরের লাল কোণে ঝুলিয়ে দিল তাকে। লোকেরা সবাই বিস্ময়াবিষ্ট হল, দেবমাতার কি অপার লীলা। ছোট বৌমা সব্বাইকে বললো, এই মুক্ত আমার মা দিয়েছেন আমাকে। এটা না পেলে আমি কিছুতেই এত সুন্দর করে কাজ শেষ করে সাজাতে পারতাম না।

নিজের নিজের ভাবধারা, বোধ আর চিন্তা অনুযায়ী সব বৌমারই পুরস্কৃত হলেন অবশেষে।

বড় বৌমার কপাল মন্দ। কোনো কাজই জুটল না তার প্রতিবেশীরা নিন্দে মন্দ করতে থাকলো, আর চোখের জলে, কান্নায় অবগাহন করতে থাকলো সে।

মেজ বৌমার হাল না ভালো না মন্দ। অন্ন জল নিয়ে তার নিত্যি হ্যাপা চলতেই থাকলো, রোগ ভোগের আনাগোনা আর কোনো কিছুর জন্যই দুটো ভালো কথা ও জুটল না তার।

আর ছোট বৌমা মা হলো তিন পুত্র সন্তানের। আজ পর্যন্ত তারা বেশ সুখে আনন্দে আর গৌরবেই আছে। পড়শীদের সাহায্য আর ভালোবাসা তার প্রতিদিনের সঙ্গী।

ভাষান্তর :
মাধবী ভট্টাচার্য
গৌতম ঘোষ।

ДЕТИ ВОРОВ

Жил-был вор. И было у него три сына. Вор знал свой особый секрет воровства, он никогда не попадался, и шапка горела на нём яркими каменьями богатства.

Вор воровал всю жизнь. Все работали. А он палец о палец не ударив, ни в чем себе не отказывал.

- Пусть дураки работают, а мы за их счет жить будем! – похваляется вор перед детьми, какой он умный и ловкий. – Пусть дети дураков пешком ходят, раз они дети дураков, а вы достойны на самых лучших машинах ездить!

Баловал он детей, как мог. И выросли они достойными своего отца.

Настало время, собрался старший сын женился. Стало тесно ему в родительском доме. Вдвое больше стал воровать вор, ведь теперь приходилось кормить не только свою семью, но и семью старшего сына. Отстроили новый дом. А за ним и средний сын подрос. Ничего не поделаешь. Отстроили еще один дом для семьи среднего сына. А за ним и для младшего.

Живет-поживает теперь четыре семьи в четырех прекрасных домах. Живет припеваючи. Никто не думает работать. На самых дорогих машинах катаются. Из самой дорогой посуды едят самые дорогие кушанья. Спят на самых мягких подушках. Самые дорогие развлечения прямо на дом свой воровской заказывают.

И шло бы все замечательно, кабы не года. Ведь воры тоже умирают.

Заболел вор. Позвал к себе сыновей, и говорит:

- Умираю я, дети мои. А перед смертью хочу тайну раскрыть. Научу воровать. И будете вы жить безбедно.

- Не нужен мне твой воровской секрет. Я всю жизнь жил честно. Я честный человек! – отвечает старший сын. – И так проживу.

- И я честный, - отвечает средний.

- И я, - вторит им младший.

Так все трое отказались быть ворами. Отца перенесли умирать в старый сарай. Продали дом, и поделили деньги.

Но как дальше жить – не знал ни один из них. Работать они были не приучены. Ведь дети вора были «достойны» большего! А воровать не умели. И не хотели учиться.
День за днем скудели запасы их семей. Кончились сбережения. Продали они машины и дома. Жены от них ушли.
И вот собрались братья возле сарая, где отца оставили.

- Хорошо, - говорят, - так и быть, раскрой нам свой воровской секрет.

На последнем дыхании передал вор сыновьям свою тайну и отошел в мир иной.

С тех пор жизнь детей вора наладилась. Зажили они припеваючи. И машины вернули. И дома. И жен. И у каждого по трое детей народилось. И у внуков по трое. И у правнуков. И каждый из них знает тайну воровства. Так много воров расплодилось вокруг, что дураков становится все меньше и меньше!

Не веришь? Да приглядись! Видишь? Как воры прячутся от тебя за бронированными стеклами своих блистающих лимузинов? Посмотри, как бриллианты на шеях их жен, да шапки на их хоромах горят ярко! По ним воров то и узнаешь!

চোরদের সন্তান সন্ততি

এক ছিল চোর। তার ছিল তিন ছেলে। চুরি বিদ্যার বিশেষ গোপন জ্ঞান জানা ছিল তার। ধরা সে কখনও পড়েনি। তার টুপিতে জ্বলজ্বল করত মূল্যবান দামী পাথর।

জীবনভোর সে চুরি করেছিল। অন্যরা খেটে খেত, কিন্তু সে আঙ্গুল নাড়িয়ে অন্য কোন কাজ করেনি, অথচ, নিজেকে কোন কিছু থেকে বঞ্চিতও করেনি সে।

বুকফুলিয়ে নিজের ছেলেদের সামনে সে বলত, বোকারা কাজ করে আর ওদের কর্মফলেই আমরা বেঁচে বর্তে থাকবো। মহা ধূর্ত আর কৌশলী ছিল সে। ছেলেদের বলত, বোকাদের ছেলেমেয়েরা পায়ে হেঁটে যাতায়াত করবে। কারণ তারা বোকাদের সন্তান, আর, আমাদের জন্য গাড়ি, যাতায়াতের জন্য সেরা গাড়ি।

যথাসময়ে, চোরের বড় ছেলে বিয়ের জন্য উপযুক্ত হলো। বাবা-মায়ের বাড়ির পাশেই রইল সে। চোরের খাটনি বেড়ে দ্বিগুণ হলো। চুরি বাড়াতে হলো, এখন আর সে একা নয়, বড় ছেলের সংসার হলো, শুধু নিজের সংসারের জন্য নয় বড় ছেলের গ্রাসাচ্ছেদনের জন্য তার খাটনি বাড়লো। নতুন বাড়ি তৈরি হলো বড় ছেলের জন্য।

ইতিমধ্যে মেজ ছেলেও বড় হলো। কি-ই বা করার আছে। তার নতুন সংসারের জন্য ও আর একটা বাড়ি তৈরি হলো। অন্য পুরনো বাড়িটা রইলো তার জন্য আর আর একটা ছোট ছেলের জন্য।

চারটে পরিবারের জন্য চারটে চমৎকার বাড়ি। আরামের অন্ত নেই। কাজ কর্মের কথা কেউই ভাবে না। সবচাইতে দামি গাড়ি চড়ে ঘুরে বেড়ায় তারা, দামি দামি খাবার খায় তারা মূল্যবান পাত্র থেকে, ঘুমোয় তারা নরম তুলতুলে বালিশে মাথা রেখে। বাড়িতেই চূড়ান্ত আমোদ উপকরন হাজির করে দেয় চোর সরাসরি উপভোগ করার জন্য।

সবই খুব জুৎসই মজায় চলছিল বিরামহীন। কিন্তু সবই অনন্ত নয়।মৃত্যুর দিন ঘনিয়ে আসে এমনকি চোরের কাছেও। সে ক্রমে অসুস্থ হয়। ছেলেদের কাছে ডেকে সে বলে ছেলেরা এবার আমার যাবার সময় হয়েছে। কিন্তু চলে যাবার আগে আমি তোমাদের 'গোপন বিদ্যা' জানিয়ে যেতে চাই। আমি তোমাদের শিখিয়ে যেতে চাই চুরি বিদ্যা - কি করে চুরি করতে হয়, যাতে তোমাদের সারা জীবনে কোনো কষ্ট পেতে না হয় আর কিভাবে গোঁটা জীবন আরামে কাটিয়ে যেতে পারো।

বড় ছেলে বলে উঠে, আমি তোমার চুরি বিদ্যার গোপন জ্ঞান জানতে চাই না। সারা জীবন আমি সৎভাবে কাটিয়েছি, আমি একজন সৎ মানুষ, এবং সেই ভাবেই আমি জীবন কাটাতে চাই।

মেজ ছেলে বলে, আমিও একজন সৎ পুরুষ।

ছোট ছেলেও বলে, আমিও তাই-ই

তিন ছেলেই প্রত্যাখ্যান করে চোরের জীবন, তারা কেউই আর চোর হতে চায় না।

তাদের বাবাকে নিয়ে আসা হয়েছিল গোলাবাড়িতে শেষ নিঃশ্বাস ত্যাগ করার প্রারম্ভে তার মৃত্যুশয্যায়। বাড়ি বিক্রি হয়ে গেল, অর্থ ভাগ করে দেওয়া হল।

কিন্তু এরপর? চলবে কিভাবে জীবন? ছেলেদের কেউই তো জানে না কি ভাবে জীবন চালাতে হবে? কোন কাজ করতেই অভ্যস্ত নয় তারা, কিছুই জানে না। আর কিছু না হোক, চোরের সন্তানেরা নিতান্তই চোর হতে পারতো। কিন্তু চৌর্যবৃত্তি জানা নেই, ফলে চুরি করার পারদর্শীতাও নেই, শিক্ষানবীশী না থাকায়। শিখতেও চায়নি তারা চুরি বিদ্যা।

ক্রমশ কলসীর জল শেষ হলো, জমানো পুঁজি, সম্পদ ফুরিয়ে যেতে থাকলো। বিক্রী হয়ে গেলো তাদের বাড়ি, গাড়ি। তাদের বউরাও ছেড়ে চলে গেলো।

ভায়েরা একজোট হলো চালার নিচে যেখানে তারা তাদের বাবাকে ছেড়ে গিয়েছিল তাঁর মৃত্যুশয্যায়। তারা বললো, বেশ ঠিক আছে। তবে তাই হোক, তোমার গোপন বিদ্যা জানাও আমাদের।

শেষ নিঃশ্বাস ত্যাগ করার আগে চোর তার সন্তানদের চুরি বিদ্যার

গোপন কলকাঠি শিখিয়ে দিয়ে ঢলে পড়লো অন্য জগতের কোলে।

সেই থেকে চোরের ছেলেদের জীবন আবার স্বাভাবিক হয়ে গেল। আবার তারা আরামে খোশমেজাজে জীবন কাটাতে লাগলো। গাড়ি ফিরে এলো, বাড়ি ফিরে এলো, বৌ-রাও, তাদের প্রত্যেকের তিনটে করে সন্তান হলো, তিনটে করে নাতি-পুতি। আর তাদের প্রত্যেকেই জেনে নিয়েছিল চুরি বিদ্যার গোপন ছলা কলা। ফলে চতুর্দিকেই বাড়তে থাকলো চোরেদের সংখ্যা, আর ক্রমশঃই কমতে থাকলো বোকাদের সংখ্যা।

আপনি বিশ্বাস করছেন না? চারদিকে তাকিয়ে দেখুন একবার। দেখছেন? আপনার পিছনেই কেমন লুকিয়ে আছে চোরেরা ঝকঝকে লিমুজিন গাড়ির বর্মাচ্ছাদিত কাচের আড়ালে? দেখুন তাদের বৌদের গলায় কেমন হীরের ছটা, ওদের ফারের টুপির ওপরটা, কেমন জ্বলজ্বল করছে আলোক দ্যুতিতে। আপনি নিশ্চিত জানবেন ওরা সব চোর।

ভাষান্তর :

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ

ВЗЯТКА

Жила была мышь. Не буду говорить, в каком кабинете проводила она время, а то, может быть другим мышам станет обидно. Каждый день серая мышь надувала из себя большую крысу, перекладывала на столе папки с документами и бумагами, думая, а не потерять ли чего? А вдруг посетители кабинета недостаточно её уважают и недостаточно боятся её серости? Мышь знала, где можно ставить печать, а где нельзя. Так же знала она, сколько времени надо потратить, чтобы выдать ту или иную справку.

К таким вот выкрутасам мыши посетители давно привыкли. Они знали, если в этот кабинет попадают документы, они могут потеряться, могут не подойти по каким-то причинам, могут задержаться в работе, что хуже всего.

И чтобы мышь работала охотнее, а вернее не мешала работе, ей приносили деньги, и оставляли в конверте, на столе, а порою прямо так, давали в лапки.

Мышь думала, что очень хорошо устроилась в жизни. И уже стала походить на человека.

Однажды ей очень захотелось пойти на рынок, купить чего-нибудь вкусненького. Взяла она денежку, и ужаснулась. Прямо поперек на бумажке было написано «ВЗЯТКА!» Перебрала мышь остальные накопления. И на всех других бумажках была та же надпись. С трудом нашла денежку, на которой не было злополучной надписи, кажется ей подарила ту денежку мать на день рождения, и, успокоившись, мышь пошла на улицу.

Вкусненького ей уже не хотелось. Одна мысль терзала нашу бедную мышь: а не сошла ли она с ума? Зажав крепко в лапках ценную бумажку, она тихо открыла кабинет своего врача. Там, за большим столом сидела толстая крыса, а может быть, надутая мышь.

ঘুষ

এক যে ছিল ইঁদুর। সে বাস করতো কোন পাঠকক্ষে তা আমি বলব না, তা হলে হয়তো বা অন্য ইঁদুরেরা আঘাত পাবে মনে। দিন দিন বাড়তে বাড়তে ধুসর ইঁদুরটা ক্রমে বেশ হৃষ্টপুষ্ট ধেড়ে ইঁদুর হয়ে উঠলো। টেবিলের উপর কাগজপত্র নথিপত্র ঠিক ঠাক করে রাখলো, যাতে কোন কিছু হারিয়ে না যায়। যেন অতিথি অভ্যাগতেরা, অসম্মান না করে বসে হঠাৎ, বিবর্ণ ম্যাড়মেড়ে অবস্থা দেখে। ইঁদুর জানত কোথায় শীলমোহরের ছাপ দিতে হবে আর কোথায় নয়। আর সে এটাও জানত যে কতদিন লাগতে পারে একটা সংশাপত্র সরবরাহ করতে।

অতিথি অভ্যাগতরা অভ্যস্ত ছিলেন ইঁদুরটির নিজস্ব বিশেষ কায়দা কানুন সম্পর্কে। তাঁরা জানতেন এই ঘরে নথিপত্র, দলিল দস্তাবেজ জমা পড়লে হারিয়েও যেতে পারে, বিশেষ বিশেষ কারণে বা প্রয়োজনে তা অ-দরকারি হয়ে যেতে পারে কিংবা নিতান্তই নিষ্প্রয়োজনীয়ও হতে পারে, হয়তো বা বিবেচনাধীন বলেও দীর্ঘদিন আটকে থাকতে পারে, যা প্রকৃতপক্ষে সবচাইতে খারাপ এবং বেদনাদায়ক।

ইঁদুরটি কাজ করলেও করতো নিজের খেয়াল মাফিক, অথবা নাক গলাত না কাজকর্মে। ওঁরা ইঁদুরটির জন্য অর্থ নিয়ে আসতেন, আর খামে ভরে রেখে দিতেন টেবিলের উপর আর কখনও বা সরাসরি তার হাতে।

ইঁদুর ভাবলো তার জীবন মোটামুটি ভাবে বেশ থিতু হয়েছে, আর সে এবার পুরোপুরি ভাবেই বেশ মানুষের মতো হয়ে উঠেছে। একদিন তার ইচ্ছে হলো বাজারে যাবার কিছু খাবার দাবার আনবার জন্য। টাকা নিল সে আর চমকে উঠলো সে ভয়ে, বড় বড় করে লেখা রয়েছে তার উপর - 'ঘুষ'। জমানো যা কিছু অর্থ ছিল তার সবটাই নিল সে আর আবারো চমকে উঠলো এই দেখে যে, তাদের প্রত্যেকটার উপরই লেখা রয়েছে একই কথা - 'ঘুষ'। অনেক কষ্টে সে খুঁজে পেল সামান্য কিছু অর্থ, যার উপরে ঐ ভয়ঙ্কর কথাটি লেখা নেই। ইঁদুরের মনে হলো, তার জন্মদিনে তার মা তাকে ঐ অর্থ উপহার দিয়েছিল। নিশ্চিন্ত হল এবার সে, এগোল রাস্তার দিকে।

ভালো মন্দ কোন খাবার দাবার আর সে চাইছিল না। একটা দুর্ভাবনা তার মাথায় ঘুরপাক খেতে থাকলো, পাগল হয়ে যায়নি তো সে! মূল্যবান কাগজগুলি খামচে চেপে ধরে সে আস্তে আস্তে দরজা খুললো চিকিৎসকের ঘরের। সেখানে টেবিলের অপর প্রান্তে বসে রয়েছে কুঁদো ফুলে মোটা হওয়া এক ইঁদুর। জিজ্ঞেস করলো সে-

আপনার কিসের অসুবিধে?

আজ্ঞে, মনে হয় আমি অলীক কিছু দেখছি, ভুল ভাল দেখছি। এই দেখুন না, দেখুন, এই কাগজগুলোর উপর আপনি কিছু লেখা দেখছেন কি? কই নাতো, এতো স্বাভাবিক মনুষ্যজাতির অর্থ। যাক বাবা, ঈশ্বরকে ধন্যবাদ। স্বস্তির নিঃশ্বাস

- На что жалуетесь?

- У меня, кажется, галлюцинации. Вот вы, видите что-нибудь на этой бумажке?

- Нет, - ответила крыса, - нормальные человеческие деньги.

- Ну, слава Богу, - вздохнула облегченно мышь, - тогда возьмите, меня надо срочно вылечить.

И только крыса, как всегда, взяла денежку, как на ней отчетливо проявилось страшное слово «ВЗЯТКА!»

- Что это вы такое мне суете! – воскликнула крыса и выгнала бедную мышь из кабинета.

Целую неделю после этого мучалась бедная мышь оттого, что ей пытались всучить ненавистные деньги, поперек которых видела она только слово «ВЗЯТКА!». И хотела она их взять, да не могла.

Пришлось мышке покинуть кабинет. Трудно было отвыкать от своей значимости, от уважения с каким посетители протягивали ей денежки. Но ведь надо было как-то жить. И мышь пошла воровать, где и попалась в мышеловку, потому что совершенно не умела этого делать.

ফেলল ইঁদুর। তাহলে, আপনি এই অর্থ গ্রহণ করুন, জরুরী চিকিৎসার দরকার আমার।

এবং যথারীতি ইঁদুর যখনই হাতে অর্থ নিত তার উপর ফুটে উঠত সেই ভয়ঙ্কর কথা - 'ঘুষ'।

কি হলো? মজা কিসের? ধেড়ে ইঁদুর চিৎকার করে উঠলো আর ছোট ইঁদুরকে বার করে দিল ঘর থেকে।

এরপর গোটা সপ্তাহ জুড়ে বেচারা ইঁদুর মনমরা আর দুশ্চিন্তাগ্রস্ত। তোলপাড় হতে থাকলো তার ভিতর এই ভাবনায় যে ঐ নোংরা ঘৃণ্য অর্থ তার হাতে কেউ তুলে দিচ্ছে, আর তাতে জ্বলজ্বল করছে লেখা - ঘুষ। সে নিতে চাইছিল অর্থ তার অভ্যাসবশে, কিন্তু পারছিল না কিছুতে।

ইঁদুরকে তার বাসস্থান ছেড়ে দিতে হলো। খুব কঠিন ছিল দীর্ঘদিনের পুরানো অভ্যাস বাতিল করা। বিশেষতঃ যা ছিল তার কাছে বিশেষ প্রয়োজনীয় এবং গুরুত্বপূর্ণ, তার সম্মানও বটে, যে জন্য অভ্যাগতেরা তাকে অর্থ দিতেন। কিন্তু বাঁচতে তো হবে কোনভাবে, আর তাই সে অন্য পথ নিল, চুরি করার পথ। আর তাইতেই ধরা পড়লো সে ইঁদুরধরা কলে। কারণ এই বৃত্তিতে সে অভ্যস্ত ছিল না।

ভাষান্তর:
মাধবী ভট্টাচার্য, গৌতম ঘোষ

ВИЛКА

Он не любил эту Вилку. У неё были толстые неудобные зубцы.

Вилка лежала в верхнем шкафчике стола и думала о том, что он её не любит.

А ещё он не любил тещу. Когда та приходила в гости, он непременно подавал ей эту вилку. И Вилка, уж будьте покойны, всенепременнейше старалась впиявиться в тещин язык.

Он не любил соседа пьяницу. И Вилка тоже знала об этом. И конечно правдами и неправдами старалась проткнуть небритую щеку пьяницы.

Как то он мыл посуду, и вспомнил о ненавистной Вилке. Но в шкафчике стола её не оказалось. «Где же эта несносная Вилка?» - подумал хозяин, и стал обыскивать всю кухню. «Наверное, теща утащила, или этот сосед алкоголик…»

На поиски нелюбимой Вилки ушли все выходные. И только вечером, выйдя на балкон, хозяин обнаружил потерю возле цветочных горшков. Ею жена рыхлила землю и забыла положить на место.

-Не смей больше никогда брать мою Вилку! – сказал хозяин жене.

-Почему?

-Это моя любимая Вилка! Она для гостей. На, почисти!

И Вилка была счастлива. Нет, она, конечно, знала, что хозяин её по прежнему не любит, но это не мешает ему считать её весьма полезной.

কাঁটা

এই কাঁটাটা ওঁর পছন্দের ছিল না। এটার দাঁতগুলো ছিল মোটা আর অস্বস্তিকর। কাঁটাটা পড়েছিল টেবিলের বন্ধ দেরাজে, সে ভেবেছিল যে তাকে পছন্দই করেননা তিনি।

উনি নিজের শাশুড়ীকেও পছন্দ করতেন না। নিশ্চয়ই শাশুড়ী যখন জামাই-এর কাছে এসেছিলেন, তখন এই কাঁটাটা জামাই তাকে দিয়েছিলেন ব্যবহার করতে আর ঠান্ডা মাথায় কাঁটাটা খুঁচিয়ে দিতে চেষ্টা করছিল শাশুড়ীর জীব, এ সব নিয়ে কাঁটার কোনো উদ্বেগ বা দুশ্চিন্তা ছিল না, আর সে সব নিয়ে যে কোনো চেষ্টা চরিত্তিরও করে নি।

উনি পছন্দ করতেন না মাতাল পড়শীকেও। এসব কথা জানা ছিল কাঁটার। আর অবশ্যই সত্যি কথা বলতে কি, মাতালটার দাড়ি না কামনো গালও কোন না কোন ভাবে খুবলে দিতে চেয়েছিল কাঁটাটা।

থালা ধুতে ধুতে ওঁর মনে হল অপছন্দের কাঁটাটার কথা। কিন্তু বন্ধ দেরাজের ভিতরের কাঁটার কাছে সে খবর পৌঁছল না। কাঁটার মালিক ভাবলেন, 'কোথায় গেল সেই অসহ্য কাঁটাটা?' আর খুঁজতে শুরু করলেন তাকে গোটা রান্নাঘর জুড়ে। মনে ভাবলেন বোধহয় শাশুড়ীই নিয়ে গেছেন সেটা অথবা পড়শী মাতালটা . . .

সপ্তাহান্তের গোটাটাই কেটে গেল কাঁটাটা খুঁজতে। অবশেষে সন্ধ্যে বেলায় বারান্দা থেকে বেরোতেই ফুলের টবের পাশে গৃহকর্তা সন্ধান পেলেন খোয়ানো বস্তুটির। ওঁর স্ত্রী টবের মাটি আলগা করেছিলেন কাঁটাটা দিয়ে কিন্তু ভুলেই গিয়েছিলেন যথাস্থানে তাকে রাখতে।

আর হেসো না, ভবিষ্যতে কোনোদিন আমার কাঁটায় হাত দিও না, নিও না, এই বলে রাখলুম তোমায় বললেন গৃহকর্তা।

কেন?

কারণ এটা আমার প্রিয় কাঁটা! এটা অতিথিদের জন্য নয়। তোমার সাফাই কাজের জন্য নয়।

খুব খুশি হল কাঁটা। যদিও সে জানতো যে গৃহকর্তা মোটেই তাকে ভালোবাসে না, পছন্দ করে না, তবুও এটা তো ঠিক যে তিনি কাঁটার বিষয় কোন হস্তক্ষেপ বা ব্যতিচারও করেন না তাকে বেশ করিৎকর্মা মনে করে।

ভাষান্তর :

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ

ЧЕЛОВЕК

Он топтал белые маки на белом песке. Он рушил солнечные кружева бликов на бирюзовых морских волнах винтом моторной лодки. И, пробираясь сквозь заснеженное поле, подчеркивал свое превосходство двойной чертой колеи своей машины.

Человек ехал, летел, бежал, плыл. Шумели кедры, пели киты, кричали птицы: «Интересно, когда же у тебя проснется совесть? Ты не умеешь читать писем, что оставляет тебе дорога, не внемлешь языку трав, не чувствуешь запаха беды…»

И однажды он увидел… растоптанные белые маки на белом песке, порванную паутину, кедры, порубленные прямо в реки и горы мусора. Оказывается, он обогнул Землю. И не было места, где бы Человек не оставил следов. Длина его пути

оказалась короче, чем жизнь. Тогда Человек подумал: «А что дальше? К чему стремиться и куда бежать, плыть, лететь?»

Ему захотелось вернуться туда, где пахли детством нежные лепестки первоцветов. Но он не нашел их. Ему захотелось нырнуть в чистый ручей прохладного леса. Но сквозь обугленные ветки временами проглядывало лишь строгое солнце, пытаясь колоть ему глаза. Разгневанное море облаков, текущих по небу предвещало бурю. Тучи заворачивались за верхушки деревьев, как огромные волны.

И Человек понял. Он понял, что хотела сказать ему дорога, о чем шумели тогда еще живые деревья, пели киты и кричали птицы.

Он увидел под ногами последний задыхающийся цветочек.

На дереве спасался от Человека оставшийся запуганный зверек, а в грязном озере плавала единственная чумазая рыбка. И тогда Человек опустился пред ними на колени и стал просить прощения.

মানুষ

সে কাঁপিয়ে পড়ল সাদা পপি ফুলের সাদা বালু ভূমিতে। তুঁতে নীল সমুদ্রের ঢেউতে সে আছড়ে ফেলল সূর্যালোকের টুকরো রশ্মি মোটর বোটের চালক যন্ত্রের তুফান গতিতে। আর বরফাবৃত জমিতে সে তার অধিপত্য জাহির করলো তাঁর গাড়ির চাকার দুই সারি দাগ খোদাই করে।

মানুষটা গাড়ি চালাচ্ছিল, উড়ে বেড়াচ্ছিল, দৌড়চ্ছিল, সাঁতার কাটছিল। মর্মর ধ্বনিতে আন্দোলিত হচ্ছিল সিডার গাছ, পাখীরা গান গাইছিল, তিমি মাছ সোচ্চারিত হল -- আমি অবাক হচ্ছি, কখন তোমার চৈতন্য জাগ্রত হবে? তুমি অক্ষরও পড়তে জানো না, চেনো না, বিপদের আঁচও টের পাওনা।

আর একদিন সে দেখল, সাদা বালিতে পিষ্ট হয়ে পড়ে রয়েছে সাদা পপিরা, মাকড়সার বাসা ভাঙা, সিডার গাছ জবাই করে করে সরাসরি ফেলে দেওয়া হয়েছে নদীতে আর পর্বত প্রমাণ হয়েছে জঞ্জালের স্তুপ। মনে হচ্ছে কেউ যেন মাটি খুঁড়ে খুবলে তছনছ করছে। এমন কোন জায়গা আর নেই যেখানে মানুষ তার চিহ্ন দেগে দেয় নি। তার যাত্রার দৈর্ঘ্য ছিল তার জীবনের চেয়ে ও ছোট।

আর তারপর মানুষটি ভবলো, 'এর পর কি? কি, কোথায় কেমন করে, এসব কিছু জানতে এবার তা হলে? দৌড়, ওড়া, নাকি সাঁতার?

সে ফিরে যেতে চাইল, তার ছেলেবেলায়, সুগন্ধে ভরা প্রাইমরোজ

ফুলের পাপড়িদের কাছে। কিন্তু কোথাও সে খুঁজে পেল না তাদের। সে ঝাঁপ দিতে চাইলো শীতল অরণ্যর স্বচ্ছ নদীতে। কিন্তু মাঝে মধ্যেই কেটে ফেলা পুড়িয়ে ফেলা গাছের ডালপালার ভেতর দিয়ে সূর্যের গনগনে তেজ তার চোখ ধাঁধিয়ে দিচ্ছিল। আকাশে ভেসে বেড়ানো ক্রুদ্ধ মেঘ সমুদ্র ঝড়ের বজ্রনির্ঘোষ করছিল। গাছেদের মাথায় মেঘেরা রিরক্তিতে গুড়গুড় করছিল বিরাট ঢেউয়ের আকারে।

মানুষটা বুঝতে পারলো। সে বুঝতে পারলো পথ তাকে কি বলতে চাইছে, কি জন্যই বা তখনো পর্যন্ত বেঁচে থাকা বৃক্ষরাজি গর্জন করছে, তিমিরা গান গাইছে আর পাখীরা কিচির মিচির করছে।

সে দেখতে পেল তারই পায়ের নিচে নিঃশ্বাসবিহীন শেষ ফুলটিকে, গাছের উপর বসে থাকা ভীত সন্ত্রাস তখনও জীবিত পশুদের, কাদা ঘোলা হ্রদে নোংরা মুখে সাঁতরানো একমাত্র মাছকে।

মানুষটি নতজানু হয়ে বসে পড়ল তাদের সামনে আর ক্ষমাভিক্ষা চাইতে থাকল তাদের সকলের কছে।

ভাষান্তর:

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ

ДЕРЕВО

Прогорелую падь сплошь покрыли семена. И уже к следующей весне из земли проклюнулись молодые деревца. Все они были в новенькой зелёной форме. У всех – прямая выправка. И взгляд – устремлённый в небо.

Так росли они несколько лет, совершенно одинаковые, не мешая друг другу, пока одно из деревьев не сказало:

- Братья! Вы позвольте мне чуть-чуть выдвинуться. Там наверху больше солнца! Я дотянусь до него, принесу вам его горячих лучей и поделю на всех!

Поверили братья, отодвинули ветки, пропустили дерево вверх. И начало оно расти быстрее других. И братья уже ничего не могли сделать, когда дерево стало забирать у них последние крохи солнца. Они так и остались тонкими и чахлыми. А дерево пустило по всей поляне корни, и уже его собственные дети выросли выше его братьев.

Дерево дотянулось до самых верхушек старого леса и начало заглядывать поверх голов, когда пришёл на поляну дровосек и срубил дерево.

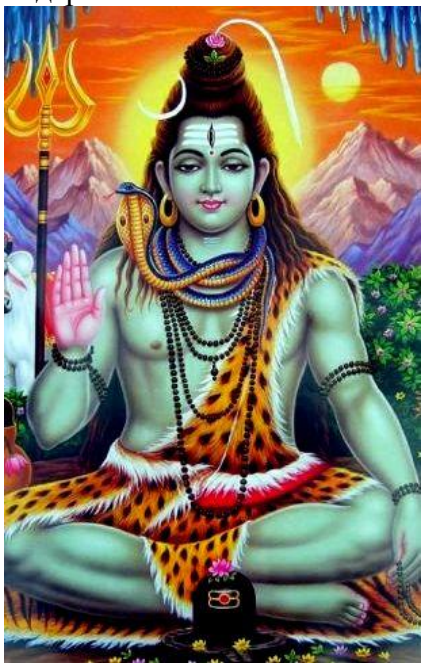

ঢেকে থাকা সমস্ত বীজ পুড়িয়ে দিয়েছিল।

আর পরের বসন্তেই নতুন চারারা বেড়িয়ে এল মাটি ফুঁড়ে। সব্বাই সবুজের আস্তরনে নতুন সাজে। এক্কেবারে সৈনিকদের মতো সোজা আর খাড়া তাকিয়ে আকাশের দিকে।

কয়েক বছরে তারা বেশ ডাগর ডোগর হয়ে উঠল। এক্কেবারে এক রকমের সব্বাই। কেউ কাউকে উৎপাত করত না, তদ্দিন পর্যন্ত, যতদিন, না এক গাছ বলল:-

ভাই সব, তোমরা আমাকে একটু এগিয়ে যেতে দাও। উপরদিকে, যেখানে সূর্যালোক আরো একটু বেশি। আমি সূর্য পর্যন্ত পৌঁছে যেতে চাই, তার উত্তাপ, তার উষ্ণ আলোকরাশি নিয়ে আসতে চাই, আর তা তোমাদের সকলের সঙ্গে ভাগ করে নিতে চাই।

ভাইরা সবাই তাকে বিশ্বাস করল। ডালপালা সরিয়ে নিল, যাতে গাছটি উপর দিকে আরো যেতে পারে। সে বেড়ে উঠতে থাকল দ্রুত গতিতে অন্যদের চাইতে তাড়াতাড়ি। যখন সূর্যের শেষটুকু আভাও সে নিয়ে নিতে থাকল তাদের কাছ থেকে, ভাইদের আর কিছুই করার রইল না। তারা সবাই শীর্ণ হয়ে যেতে থাকল, তাদের বৃদ্ধিও রুদ্ধ হয়ে গেল। আর অন্য দিকে সেই গাছটি - তার শিকড় বিস্তৃত করতে থাকল গোটা জমি জুড়ে। ইতিমধ্যে তার নিজের সন্তানেরা বড় হয়ে উঠল তার ভাইদের চাইতেও বেশি করে।

পুরনো জঙ্গলে তার শিখর পৌঁছে গেল অনেক উঁচুতে, সব্বার চাইতে উপরে, উঁকি দিতে থাকল সে অন্যদের মাথার উপর দিয়ে। তারপর একদিন এল কাঠুরে, কোপ দিল সে সব চাইতে বড় গাছে।

ভাষান্তর:

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ

ДЕРЕВЯННАЯ ВЕРНОСТЬ

- Вы мне нравитесь, - прошептал маленький Кедр еже подросшей и опушившейся Ёлочке.

А через год добавил:

- Очень!

Ёлка потупила взгляд. Будучи девушкой воспитанной, она промолчала.

Через три года Кедр сказал её:

- Я Вас люблю.

Ель опять ничего не ответила, но через пять лет протянула к Кедру корешок и игриво наступила ему на ногу.

Кедр был счастлив, каждую весну вскидывая на Ель взгляд из-под мохнатых зелёных ресниц. А Ель, осмелев, иногда по осени бросала в него шишечками.

В лесу время шло медленно и тягуче. Но вот, однажды, в размеренность их жизни ворвался страшный ураган. Молнии поджигали одиноко стоящие деревья. И некому было защитить их. Грохотал гром. Соседние берёзки вырывало с корнем и бросало оземь, как веники.

Ураган добрался и до наших соседей.

- Держитесь! – крикнул Кедр Елке.

- Я стараюсь, - ответила она.

Но мощные порывы ветра, казалось, хотели поломать её надвое. Бедняга сопротивлялась, как могла.

- Я сейчас погибну, - взмолилась Ель.

- Нет! Нет! – запротестовал Кедр.

- У меня нет больше сил. И перед смертью я хочу сказать Вам только одно. Я тоже очень, очень люблю Вас!

За эти несколько секунд урагана деревья сказали друг другу столько, сколько не говорили за всю жизнь. Тут ветер рванул с такой небывалой силой, что Ель не устояла на ногах и повалилась прямо на стоящий рядом Кедр. И всё успокоилось. Полил дождь. А Ель заплакала в объятьях Кедра:

- Брось меня! – вдруг неожиданно для обоих перешла она на «ты», - Я такая большая и толстая. А ты маленький и стройный. Брось! А то мы погибнем вместе!

আপনাকে আমার ভালো লাগে -- ফিস ফিস করে বললো সিডার গাছ সজারুকে সাক্ষী রেখে ফার গাছকে।

বছর খানেক পর সে যোগ করল - খুব ভালো লাগে।

ফার গাছ নতদৃষ্টিতে চুপ করে রইল - শিক্ষিত তরুণী সে। তিন বছর পর সিডার গাছ ফার গাছকে বলল - আমি ভালোবাসি আপনাকে।

এবার নিরুত্তর রইল ফার গাছ। কিন্তু বছর পাঁচেক পর মাটির তলা দিয়ে সে শিকড় চালিয়ে পৌঁছে গেল সিডারের কাছে আর খেলাচ্ছলে তা উঠে পড়ল তার পায়ের উপর।

খুব খুশি হল সিডার। প্রতি বসন্তেই পুরু সবুজের আস্তরনে আবৃত চোখে সে তাকিয়ে দেখত তাকে গভীর ভাবে আর তাতে উৎফুল্ল হয়ে শরতের দিনে মাঝে মধ্যেই সে মোচা ছুঁড়ে দিত সিডারের দিকে।

অরণ্যে সময় প্রবাহিত হয় ধীর লয়ে। কিন্তু তারপর, হঠাৎই একদিন, তাদের সীমিত জীবনে ধেয়ে এল ভয়ঙ্কর এক ঝড়। বিদ্যুৎ - আগুন লেগে গেল একাকী দাঁড়িয়ে থাকা গাছগুলিতে। কেউ ছিল না তাদের রক্ষা করতে। গর্জন করে বজ্রপাত হতে থাকল। পাশাপাশি ভূর্জপত্রের গাছগুলি উপড়ে পড়ল আর ঝাঁটার মত তারা নিক্ষিপ্ত হল জমির উপর।

প্রলয় ঝড় পৌঁছে গেল আমাদের পড়শীদের কাছে পর্যন্ত। সোচ্চারে

- Я никогда не брошу тебя, - ответил Кедр.

Прошло много лет. Я как-то гуляла по лесу и увидела два этих дерева: высокий и тонкий Кедр и упавшую на него огромную зелёную Ель. При малейшем движении ветра, Кедр скрипит на весь лес. И Вы знаете? Состарившийся и почти засохший, он скрипит не от боли. Он поёт от счастья! Он сам мне об этом сказал.

ফার গাছকে বলল সিডার গাছ - আঁকড়ে ধরে থাকো।

আমি চেষ্টা করছি। ফার গাছ জানালো সিডারকে।

কিন্তু বইতে থাকা প্রবল ঝোড়ো হাওয়া মনে হচ্ছিল যেন ভেঙে দু টুকরো করে দেবে তাকে।

অসহায় বেচারা সর্বশক্তি দিয়ে চেষ্টা করছিল প্রতিরোধ করতে।

আমি মরে যাব এবার, ফার গাছ করুণ ভাবে বলল। না, না, কখনই না, প্রতিবাদ করে উঠল সিডার। আমার আর কোনো শক্তি নেই। মৃত্যুর আগে শুধু বলে যেতে চাই, আমিও আপনাকে খুব ভালোবাসি।

ঝড়ের এই কয়েক মুহূর্তের মধ্যে দুটি গাছ পরস্পরকে অনেক কথা বলল। এত কথা এতদিনে পাশাপাশি থাকতেও তারা বলেনি জীবনে কোনোদিন। প্রচন্ড দাপটে ঝড় নাস্তানাবুদ করে এতটাই বিপর্যস্ত করেছিল ফার গাছকে যে সে আর নিজের উপর নিজের জোরে খাড়া হয়ে থাকতে পারছিল না, সপাটে ঢলে পড়ল পাশের সিডার গাছের উপর। ক্রমশঃ সব কিছু শান্ত হয়ে গেল। বৃষ্টি পড়তে থাকল। সিডার গাছকে জড়িয়ে ধরে ফার গাছ বলল ছেড়ে দাও আমাকে! হঠাৎই অপ্রত্যাশিতভাবে দুজনেই আপনি থেকে তুমি সম্বোধনে চলে এল।

আরো বাবা, তুমি ছোট্ট আর শীর্ণ।

ছেড়ে দাও আমাকে। নচেৎ দুজনেই মরব একসঙ্গে। সিডার উত্তর করল -

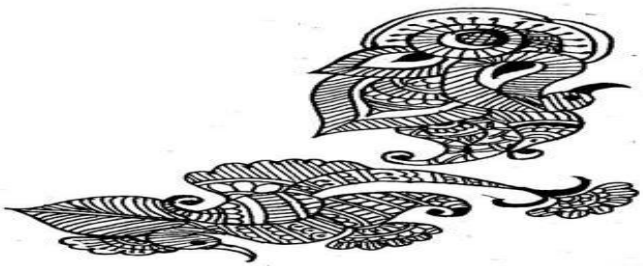

আমি কখনও তোমাকে ছেড়ে দেব না।

অনেক বছর কেটে গেছে ইতিমধ্যে। বনের মধ্যে দিয়ে হাঁটতে হাঁটতে আমি দেখতে পেলাম গাছ দুটিকে। লম্বা আর সরু এক সিডার গাছ আর তার উপর হেলে পড়েছে এক বিশালকায় সবুজ ফার গাছ। বাতাস একটু বইলেই সিডার গাছটি ক্যাঁচক্যাঁচ শব্দ করে ওঠে, গোটা অরণ্য শুনতে পায় তা।

আপনি কি জানেন? বয়সে প্রাচীন আর মৃতপ্রায় হয়েও সিডার গাছ শব্দ করে ওঠে কোনো যন্ত্রনায় নয়। সে খুশির গান গায়, সুখের গান গায়। আমাকে বলেছে সে সে কথা।

ভাষান্তর:

মাধরী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ

МУДРЫЕ МЫСЛИ

За толстым стеклом в шкафу жили книги. Они были разные. На нижней полке пыхтели от пыли неповоротливые энциклопедии, которые знали всё. Вот уж кто мог ответить на любой вопрос! Полки повыше занимали романы, повести, рассказы. Они тоже давали ответы, только длинные и подробные. С такими книгами хозяйка засыпала в кресле у камина, обнимая их, как любимую подушку. А с самой высокой полки поглядывали маленькие томики стихов. В их глазах были одни вопросы. И хозяйка редко брала стихи, потому что давно выучила их наизусть.

Хозяйка не покупала новых книг. В основном их ей дарили. И вот, на день рождения кто-то принёс сборник под названием «Мудрые мысли». С каким упоением прочла женщина созвездие лучших умов под одной обложкой! И, как это бывает, когда читаешь сразу много умных вещей, не запомнила ничего из прочитанного. Но осталась в восторге! И конечно, отвела для новой книги в шкафу лучшее место.

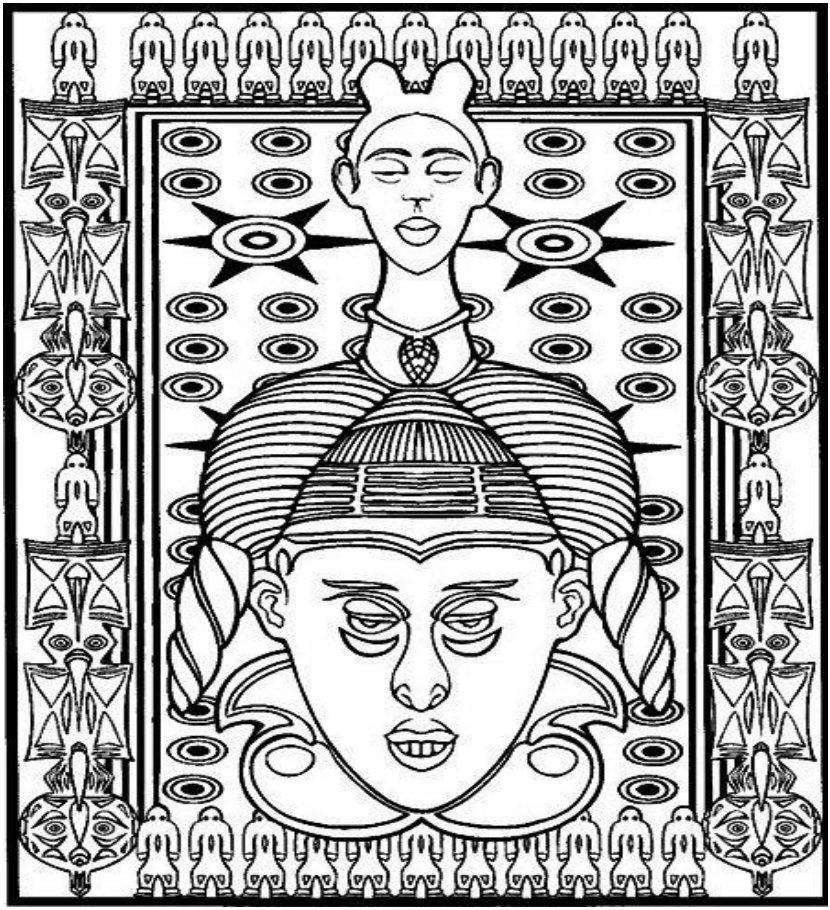

Шло время. К хозяйке приходили гости, и она знакомила их с книгами в шкафу. Или же гости сами знакомились с ними, когда хозяйка накрывала белой скатертью стол. В один из таких приёмов хозяйка любезно предложила кому-то почитать «Мудрые мысли». Так сборник цитат попал в другие руки.

Хозяйка, скорее всего, не догадывалась, что у всех книг есть свой характер. Они привыкают к людям. А некоторые сильно обижаются, если их выносят из дома, и не возвращаются совсем. Обиделись и «Мудрые мысли». К тому же они немного умели колдовать.

বিজ্ঞ চিন্তা

পুরু মোটা কাচের পিছনে আলমারিতে থাকত বইগুলো। ভিন্ন ভিন্ন ধরনের, ভিন্ন ভিন্ন বিষয়ের সব। নিচের তাকে ধুলোর আস্তরণে ঢাকা বেঢপ চেহারার বিশ্বকোষ, সবকিছু জানা ছিল ওদের, যে কোন প্রশ্নের উত্তর দিতে পারত। উপরের তাক দখল করে ছিল উপন্যাস, ছোট উপন্যাস, আর ছোট গল্প। তারাও উত্তর দিত তবে কেবলমাত্র দীর্ঘ আর বিস্তৃত। এই সব বই নিয়ে ফায়ার প্লেসের পাশে প্রিয় বালিশের মত বই জড়িয়ে আরাম কেদারায় শুয়ে ঘুমিয়ে পড়লেন গৃহকর্ত্রী। আর এক্কেবারে সবচাইতে উঁচু তাক থেকে উঁকি দিচ্ছিল গীতিকবিতার ছোট খন্ড গুলি। কিছু প্রশ্ন ছিল তাদের চোখে। ইদানিং কদাচিৎ কবিতার বইতে হাত দিতেন গৃহকর্ত্রী কারণ বহুদিন আগেই হৃদয় দিয়ে এগুলি পড়া হয়ে গেছে তাঁর, এ সব কিছুই তাঁর জানা।

নতুন বই কিছুই কেনেন নি গৃহকর্ত্রী। বেশির ভাগই তাঁর উপহার পাওয়া। আর তাই, তাঁর জন্মদিনে একজন উপহার নিয়ে এলেন এক বিশেষ সংকলন - 'বিজ্ঞ চিন্তা'। উল্লসিত হয়ে ভদ্রমহিলা বলে উঠলেন বাহঃ, উজ্জ্বল নক্ষত্রপুঞ্জ এক্কেবারে একই মলাটের মধ্যে। আর এ সব ঘাটে তখনই, যখন কেউ একসঙ্গে অনেক বুদ্ধিমত্তার বিষয়ে পড়াশোনা করে অথচ কিছুই মনে রাখতে পারে না তার পঠিত বিষয়বস্তুর বিষয়, কেমন যেন একটা ঘোরের মধ্যে কাটে তখন। নতুন বইরা অবশ্য জায়গা পেয় যায় আলমারীর শ্রেষ্ঠ স্থানে।

সময় পেরিয়ে যায়, অতিথিরা আসেন গৃহকর্ত্রীর কাছে আর তিনি তাঁদের পরিচয় করিয়ে দেন বইদের সঙ্গে। অথবা অতিথিরা নিজেরাও পরিচিত করে নেন নিজেদের মতন করে বইদের সঙ্গে যখন গৃহকর্ত্রী টেবিল সাজাতে ব্যস্ত হয়ে পড়েন সাদা টেবিল ঢাকনা দিয়ে। এরকমই এক অনুষ্ঠান সমারোহে গৃহকর্ত্রী সদয় হৃদয়ে একজন অভ্যাগতকে পড়তে দিলেন - 'বিজ্ঞ চিন্তা' গ্রন্থটি। ফলে এই উদ্ধৃতি সংগ্রহটি এবার পড়ল অন্য জনের হাতে।

গৃহকর্ত্রীটি সম্ভবতঃ বুঝে উঠতে পারেন না যে প্রতিটি গ্রন্থেরই নিজস্ব একটা চারিত্রিক বৈশিষ্ট্য আছে। তারা সব নানা ধরনের মানুষ জনের সঙ্গে অভ্যস্ত হয়ে ওঠে। আর কেউ কেউ বেশ অসন্তুষ্ট হয় যদি তাদের কোন বাড়ি থেকে নেওয়া হয়। অথচ, ফেরৎই দেওয়া হয় না তাদের নিজস্ব স্থানে। 'বিজ্ঞ চিন্তা'ও বেশ অসন্তুষ্ট হয়ে ছিল।

বহুদিন ধরে ভাববার চেষ্টা করছিলেন গৃহকর্ত্রী, তার 'বিজ্ঞ চিন্তা' তিনি কাকে দিয়েছেন, কিছুতেই মনে করতে পারছিলেন না। আর 'বিজ্ঞ চিন্তা' গ্রন্থটি পড়া হয়ে যাবার পর এবার পড়ল তৃতীয় জনের হাতে, ক্রমে চতুর্থ জনের কাছে। প্রত্যেকেই ভুলে গেল, কোথা থেকে বইটা তিনি পেয়েছেন, কাকেই বা ফেরৎ দিতে হবে। ফলে 'বিজ্ঞ চিন্তা' হাত বদল আর মালিকানা বদল করে ঘুরতে থাকল এক জনের কাছ থেকে অন্যজনের কাছে এবং ক্রমশঃ গোটা শহরই ঘুরে ফেলল অবশেষে। ক্রমশঃ মলাট গেল ছিঁড়ে, পাতা

Долго вспоминала хозяйка, кому же она отдала свои «Мудрые мысли», но так и не вспомнила. А книга после прочтения попала в третьи руки, потом в четвёртые. И все забывали предыдущих и последующих её хозяев. Так «Мудрые мысли» обошли весь город, не зацепившись ни в одной голове,

ни одним намёком. Обложка порядком истрепалась, страницы засалились и загнулись. Корешок ослабел. Но «Мудрые мысли» оставались быть, по прежнему мудрыми, потому что однажды перестали сердиться и вернулись в дом хозяйки через сотые, а, может, тысячные руки.

Прочтя их снова от корки до корки, и устанавливая за толстое стекло шкафа, хозяйка сказала:

- Да! Чудесная книга! У меня когда-то давно - давно была такая же. Только новая. Их теперь не выпускают. У кого же я её брала?…

গুলো তৈলাক্ত হয়ে গেল, ছেঁড়া ফাটা বিবর্ণ। বইটার বাঁধাই আলগা হয়ে গেল।

কিন্তু 'বিজ্ঞ চিন্তা' বিজ্ঞ হয়েই রইলো, সে আর ক্রুদ্ধ হতো না, সে সংযত হয়ে রইল আর ক্রমে ফিরে এল গৃহকর্ত্রীর কাছে, একশো হাত এমনকি হতে পারে হাজার হাত ফেরতা হয়ে।

মলাটের প্রথম পাতা থেকে শুরু করে একেবারে মলাটের শেষ পাতা পর্যন্ত পড়া শেষ করে পুরু কাচ ঢাকা আলমারির ভিতরে সযত্নে গুছিয়ে রেখে গৃহকর্ত্রী এবার বললেন - সত্যি, চমৎকার বই। আমারও এই রকম একটা বই ছিল অনেক অনেকদিন আগে। তবে সেটা ছিল নতুন। এখন অবশ্য কাউকে আর বই পত্তর পড়তে দিই না আমি। এই বইটা কার কাছ থেকে যেন নিয়েছিলাম আমি?

ভাষান্তর ঃ

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ,

ВОРОБЕЙ И СОЛНЦЕ

На двадцать пятом этаже сидел воробей и радовался, оттого что раньше всех увидел краешек восходящего солнца. Светило потягивалось длинными лучами, проникая во все прямые и косые улочки города, и ласково грело воробья. И у него в груди что-то взорвалось и чириканьем вырвалось на волю.

- Здравствуй, Солнышко! – воскликнул воробей.

Утреннее солнце нежно и мудро улыбалось в ответ.

- Чего верещишь? - прилетела Галка, - Червяка нашел на крыше, что ли?

- Тебе не понять, - ответил воробей.

- Где-то увидел хлебную корку? – появился откуда-то скворец.

- Да, нет же, - чирикнул воробей.

- Да, он вопит, потому что влюбился! – царапнула воздух гаканием чайка с помойки.

- Не угадал никто! – заключила ворона, - ха! Ха! Ха! Кар! Так чего же все-таки ты чирикаешь?

- Солнышко увидел, радуюсь.

- Оно ведь каждый день бывает! – удивились птицы.

- А я каждый день и радуюсь, - ответил воробей.

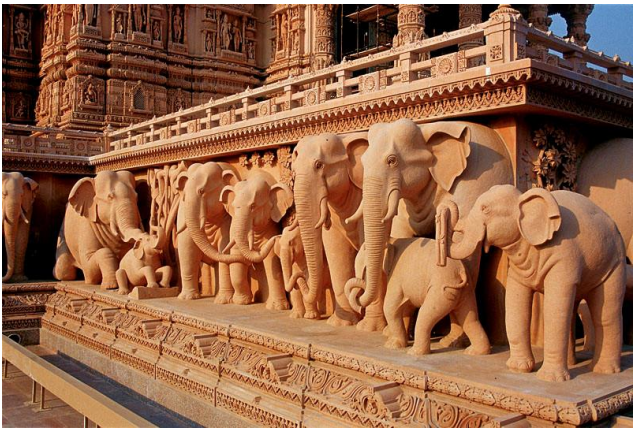

চড়াই আর সূর্য

পঁচিশ তলার উপরে বসে একটা চড়াই সানন্দে ভাবছিল যে কেউ দেখতে পাবার আগে, সব্বাইয়ের আগে সে দেখতে পায় সূর্যোদয়ের প্রথম ছটা।

বিশাল লম্বা কিরণরেখা চুঁইয়ে উজ্জ্বল আলোক দ্যুতি ছড়িয়ে পড়ে সব সোজা আর ঢালু রাস্তার উপরে আর উষ্ণতার আরাম দেয় চড়াইকে। চড়াই তার ছোট্ট বুকে কিছু একটা অনুভব করতে থাকে, মনে হয় যেন ফেটে পড়বে, কিচির মিচির করে উড়ে যায় সে মুক্তির আনন্দে।

উচ্চকিত স্বরে সে বলে ওঠে, নমস্কার প্রিয় সূয্যি মশায়। মৃদু ও বিস্তৃত হাসিতে প্রভাতের সূর্যও প্রত্যুত্তর দেয়। উড়ে আসা দাঁড়কাক চড়াইকে বলে কি ব্যাপার হে? এত কিচির মিচির কেন, পোকা মাকড় অন্য কিছু পেয়েছ নাকি, ছাদের উপর? ও তুমি বুঝবে না, চড়াই বলে ওঠে।

তুমি কি পাউরুটির টুকরো টাকরা দেখতে পেয়েছ? কোথা থেকে উড়ে এসে জুড়ে বসে বলে স্টার্লিং পাখী।

হ্যাঁ, মানে না। কিচির মিচির কিচির মিচির চড়াই বলে ওঠে। হ্যাঁ, হ্যাঁ, ও কিচ কিচ করছে কারণ ও প্রেমে পড়েছে। বাতাস সরিয়ে জঞ্জাল, ঘাঁটতে ঘাঁটতে গাঙচিল বলে এ কথা।

আরে কেউ ধরতে পারবে না ব্যাপারটা কি? হা!হা!হা! কর্! কর্! সিদ্ধান্ত জানিয়ে দেয় কাকেশ্বর।

তা কিসের জন্য কিচির মিচির তোমার?

প্রিয় সূর্য দেখেছে আমায়, আমি খুশি, খুব খুশি।

যাই হোক, প্রতিটা দিন এখানেই, এইখানেই, বিস্ময়াবিষ্ট হয়ে বলে ওঠে ছোট্ট পাখীটা।

আর প্রত্যেক দিনই আমি খুশির আনন্দে মেতে উঠি, চড়াই বলে ওঠে।

ভাষান্তর:

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ

ПУСТОЙ ОРЕХ

Старая Орешница знала, что он пустой, но тратила на него времени столько же, сколько на остальных своих детей, только глядя в его сторону длинно и прерывисто вздыхала. Орешки росли и зрели на дереве, отягощая ветки с завидной уверенностью, не догадываясь о внутренней пустоте своего брата.

Когда дети дозрели, Орешница сделала все, чтобы поровну поделить землю между ними для последующего роста и разбросала их в разные стороны.

- Растите в большие деревья, и давайте плоды! – наставляла она.

Пустой орех тоже получил свой кусочек земли.

Но заветы матери удалось выполнить только нескольким укатившимся в траву, поскольку их не заметили женщины из соседней деревни. Остальных собрали и понесли на базар.

Как обрадовались орехи, попав в корзину. Еще бы! Им предстояло большое путешествие! И пустой орех тоже обрадовался.

На рынке их сдали оптом и, подержав немного на складе, повезли на поезде в большой город.

- Мы едем в дальние края! – загордились орехи. И радовались до тех пор, пока не попали на стол.

Это был день рождения маленького мальчика. Пустой орех лежал на большом блюде вместе со всеми и так же как полные братья надувал щеки от важности.

- Съешь меня! Съешь меня! – пищали они.

- И меня! – повторял за ними пустой орех.

Но мужчина, который колол орехи, отложил его в сторону. Орех ведь был легкий, поскольку пустой.

- На, - протянул он его имениннику после того, как ушли гости, - сделай что-нибудь.

У мальчика уже была коллекция самодельных человечков из шишек, желудей, репейника.

Не долго думая, мальчик нарисовал на орехе носик, ротик и очки, приделал туловище и сказал ему:

- А ты будешь президентом!

И посадил его на верхнюю полку, на зависть остальным человечкам.

Пустой орех, конечно, всегда догадывался, что он не такой как все, но чтобы стать президентом целого шкафа самодельных человечков!… О таком счастье он просто не мечтал!

- У меня была возможность вырасти в целое дерево, - снисходительно говорил он своим подданным, - была возможность путешествовать по всей стране, я так вкусен, что стал бы лучшей приправой к любому блюду, но я должен нести тяжкий крест руководителя и я буду верен своему долгу до конца…

У барышень в юбках из высушенных цветов от такой проникновенной речи на глаза наворачивались слезы, они подпрыгивали на своих спичках и пищали:

- Да здравствует Орех! Да здравствует Орех!

И все подхватывали эти слова в восторге. Ведь пока не раскусишь, трудно понять, что он пустой!

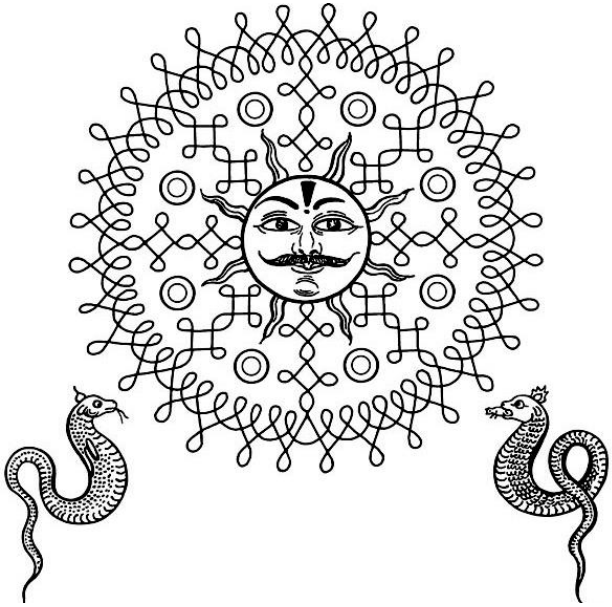

ঝুড়িতে উঠতে পেরে খুব খুশী হল বাদামেরা। বাজি ধরে বলতে পারি, তাদের দারুন সফর হল। আর সেই ফাঁপা বাদামটিও বেশ উৎফুল্ল হয়েছিল।

বাজারে পাইকারীতে বিক্রী হয়ে গেল তারা, তাদের স্থান হল ভান্ডারে আর তারপর নিশ্চয়ই রেল গাড়ি চাপিয়ে তাদের আনা হয়েছিল শহরে।

আমরা অনেক দূরের দেশে পাড়ি জমিয়েছি - গর্বিত বাদামেরা উল্লসিত হল। টেবিলে পৌঁছানো পর্যন্ত তারা খুব আনন্দ করছিল।

দিনটা ছিল এক ছোট্ট ছেলের জন্মদিন। ফাঁপা খোলের বাদামটিও ছিল এক বড় পিরিচ-এর উপর গাল ফুলোনো মাতব্বর বাদামদের সঙ্গে।

তারা ক্যাঁচর কোঁচর করছিল - আমাকে খাও! আমাকে! আমাকে!

আমাকেও নাও - ফাঁপা খোলের বাদামটিও বললো।

কিন্তু যে মানুষটি বাদামের খোলা ভাঙছিলেন, তিনি একপাশে সরিয়ে রাখলেন তাকে। এটা ছিল বেশ হালকা, কারণ ফাঁপা।

অতিথি অভ্যাগতরা সকলে বিদায় নিলে, ছোট্ট ছেলেটিকে ডেকে তার হাতে তুলে দিলেন ফাঁপা খোলাটি, আর বললেন - এটা দিয়ে কিছু তৈরি কোরো। ওক গাছের ফল, পাইন গাছের মোচা আর কাঁটাগাছ বা ডালপালা দিয়ে বাড়িতে বানানো নানান চেহারার নানা মূর্তি তো ছেলেটির সংগ্রহে ছিলই। কোনো রকম দ্বিধা না করেই সে বাদাম খোলাটির একটি নাক এঁকে দিল

ফাঁপা খোল সর্বস্ব বাদাম

বৃদ্ধা বাদাম গাছটি জানতো যে তার সন্তানদের মধ্যে একটি নিতান্তই শূন্যগর্ভ। কিন্তু অন্যান্য সন্তানদের মত তার প্রতিও সে খেয়াল রাখতো এবং সময় দিত সমানভাবেই। শুধু মাঝে মাঝে সে অনেকক্ষণ ধরে তাকিয়ে থাকত এই সন্তানটির দিকে আর যন্ত্রণায় দীর্ঘশ্বাস ফেলত। ক্রমে বাদাম ছানারা বড়ো হয়ে উঠল, গাছের ডাল ভারী করে হৃষ্টপুষ্ট হয়ে উঠল ঈর্ষণীয় ভাবে অথচ তাদেরই এক ভাইয়ের অন্তঃসারশূণ্যতা তাদের কাছে অজ্ঞাতই রয়ে গেল। যখন বৃদ্ধা বাদাম গাছটির সন্তানেরা বেশ পরিপক্ক হয়ে উঠল, তখন তাদের আরও বৃদ্ধির জন্য সমানভাবে জমি ভাগ করে সে চর্তুদিকে ছড়িয়ে দিল তাদের।

সন্তানদের সে বললো, তোরা আরও বড় হয়ে বড় বড় গাছ হবি, আর তোরা সকলে ফলবতী হবি।

শূন্য খোলের বাদামটিও তার নিজের জন্য একটুকরে জমি পেল।

মার কথা কিন্তু সকলের ক্ষেত্রে খাটল না। কেউ কেউ পড়ে রইল ঘাসের মধ্যে। পাশের গ্রামের মেয়েদের নজর এড়িয়ে গেল তারা। অন্য বাদামদের সব একজোট করে আনা হল বাজারে।

সর্বাগ্রে, তারপর মুখ আর চশমা, আর গড়ে দিল তার শরীর। তারপর তাকে বললো-

তুমি এবার হবে রাষ্ট্রপতি।

অন্য সব ঘরে তৈরি পুতুলদের কাছে ঈর্ষণীয় করে এক্কেবারে উপরের তাকে সে বসিয়ে দিল রাষ্ট্রপতিকে।

ফাঁপা খোলের বাদাম জানতো যে সে অন্য সকলের মত নয়। কিন্তু পুতুল রাজ্যের রাষ্ট্রপতি! . . . এমন সুখের কথা সে কেবল স্বপ্নেই ভেবেছিল।

তার প্রজা সাধারণকে সে বললো নির্দ্বিধায় - আমার সুযোগ ছিল এক মহীরুহ হবার, আমি দেশের চারধার ঘুরে বেড়াতে পেরেছি, আমিও এতই সুস্বাদু যে যে কোন খাবারের সঙ্গেই আমাকে পরিবেশন করা যেতে পারত, কিন্তু আমাকে পালন করতে হবে রাষ্ট্রপতির মহান ও গুরুদায়িত্ব, আর আমার দায়িত্ব ও কর্তব্যর প্রতি আমি অবিচল বিশ্বস্ত থাকব . . .।

এমন আবেগ তাড়িত বক্তৃতা শুনে ঘরে বানানো শুকনো ফুলের তৈরি সুন্দরী যুবতী মহিলারা কেঁদে ফেললেন। তাঁরা তাদের জুড়িদের উপর ঝাঁপিয়ে পড়ে চিঁ চিঁ স্বরে ধ্বনি তুললেন:

দীর্ঘজীবী হোক বাদাম! বাদাম দীর্ঘজীবী হোক! আর সমবেত স্বরে উল্লাসে অন্যরাও প্রতিধ্বনি তুললো দীর্ঘজীবী হোক বাদাম।

এটা বুঝতে পারা খুব সহজ তো নয়ই, বরং বেশ দুরূহই যে আসলে

বাদামটা ফাঁপা, খোলা সর্বস্ব মাত্র। যতক্ষণ না পর্যন্ত কেউ খোলাটা ভেঙে টুকরো করছে ততক্ষণ পর্যন্ত কেউ জানবে কেমন করে?

ভাষান্তর:

মাধবী ভট্টাচার্য

গৌতম ঘোষ

АНГЕЛ И ДЕМОН

И надо же было угораздить меня влюбиться в Демона! Я думала, они страшные. А этот был красив. Я случайно увидела его в толпе, и поняла – мне без него не жить!

Я думала, они алчные до наших душ. И, чтобы сделать ему подарок, черной ночью я вынула душу свою из тела. И душа моя устремилась туда, где жил Демон, увлекая меня за собою. Она откуда-то знала, где его искать.

Душа светилась от любви. Мой Демон удивленно взглянул на меня и на мою душу.

- Тебе туда нельзя! – сказал он и закрыл передо мною врата Ада.

В обнимку со своей неприкаянной душою, я возвращалась домой, и тут увидела Ангела.

Он смотрел на меня влюбленными глазами, полными слез. Он принес мне в подарок свои крылья. Но я отказалась от них.

- Тебе туда нельзя, - сказала я. И закрыла перед ангелом дверь в свою спальню.

দেবদূত আর দৈত্য Ангел и Дэмон

একজন এক দৈত্যের প্রতি প্রেমে আসক্ত করল আমায়। আমি ভেবেছিলাম ওরা খুব ভয়ের। কিন্তু ও ছিল অপূর্ব সুন্দর। দৈবাৎ ভিড়ের মধ্যে দেখেছিলাম তাকে আর বুঝতে পেরেছিলাম, তাকে ছাড়া আমি বাঁচতে পারব না। আমি ভেবেছিলাম ওরা আমাদের অন্তরাত্মার প্রতি লোভী। আর তাই ওকে উপহার দিতে চেয়ে এক আঁধার রাতে আমি আমার শরীর থেকে বের করে এনেছিলাম আমার আত্মা। আর আমার আত্মা ধাওয়া করল দৈত্যকে তার বাসস্থানে। আমাকে টেনে নিয়ে চলল সঙ্গে। কি করে জানলো সে, কোথায় খুঁজে পাবে তাকে? ভালবাসায় উদ্ভাসিত হয়ে উঠেছিল সেই আত্মা। অবাক হয়ে দৈত্য তাকাল আমার দিকে আর আমার আত্মার দিকে।

তোমার ওদিকে যাওয়া উচিৎ হবে না, সে বলে উঠল আর আমার মুখের উপর বন্ধ করে দিল নরকের দরজা।

ওর অস্থির আত্মার সঙ্গে হাত ধরাধরি করে আমি বাড়ি ফিরে এলাম, আর সেখানেই দেখতে পেলাম দেবদূতকে।

ভালবাসায় আকুল সজল নয়নে আমাকে দেখল সে। একটা উপহার এনেছিল সে আমার জন্যে, ওর ডানার থেকে তৈরি। আমি অস্বীকার করলাম তা নিতে।

তুমি যেওনা ওখানে, তোমার যাওয়া উচিৎ হবে না, আমি বললাম। আর দেবদূতের মুখের উপরই বন্ধ করে দিলাম আমার শোবার ঘরের দরজা।

АНТОНИЯ

Я долго мечтала об этой кукле. Тревожный взгляд её зеленых глаз не давал мне покоя. Но кукла с римским именем Антония оказалась фарфоровой, да к тому же коллекционной, с настоящим сертификатом подлинности, поэтому непомерно дорогой.

Проходили долгие дни в ожидании денег. Я заходила в магазин, посмотреть на куклу.

Наконец, Антония заняла достойное место на моем фортепиано. И в комнате стали происходить совершенно невероятные вещи. Каждый раз что-то падало с полок и разбивалось, как будто комната наполнилась невидимыми малыми детьми. Неожиданно для всех расцвели кактусы, которые торчали без дела уже двадцать лет.

А вчера ночью я проснулась оттого, что на меня кто-то пристально смотрит. Во взгляде Антонии не было тревоги, а какая-то жестокая любовь и едкий укор. Я подумала обо всех своих не рожденных детях. У меня бы их могло быть много. Я поняла, какая сила заставила меня заполучить эту куклу. И поняла, что Антония хотела сказать мне.

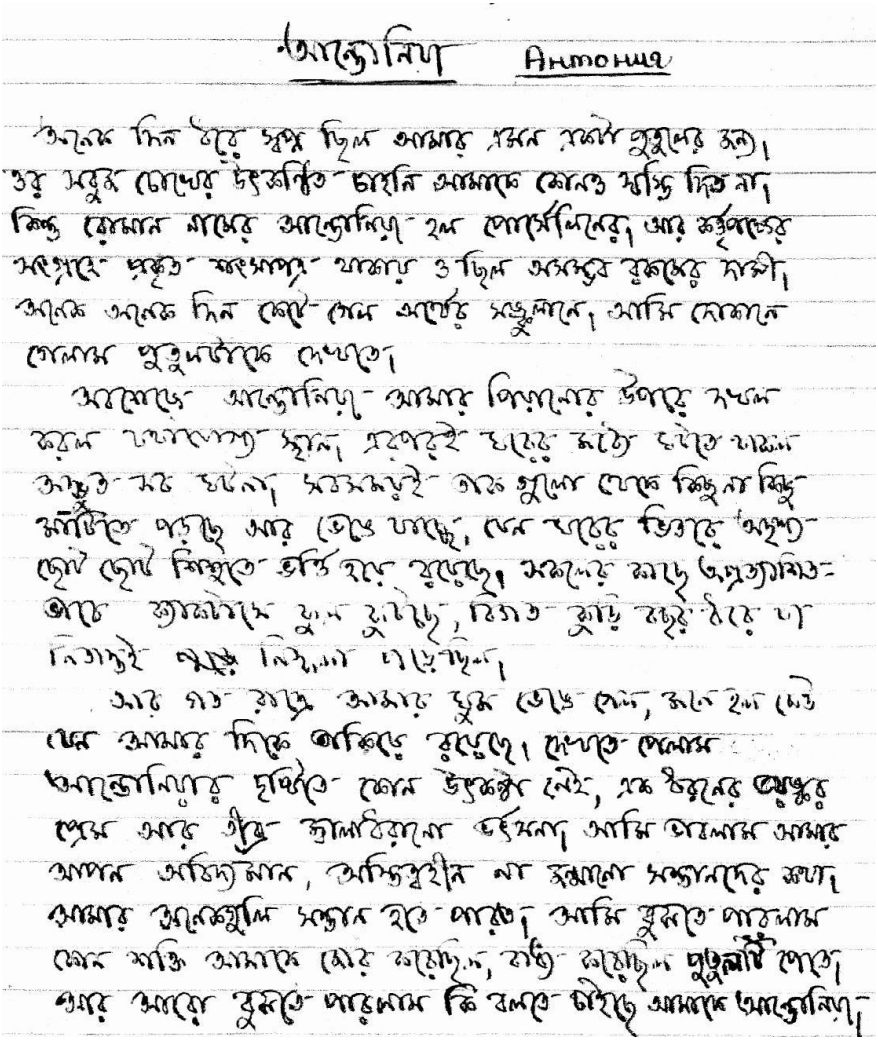

ПТИЦЫ ПРОЖИТЫХ ЛЕТ

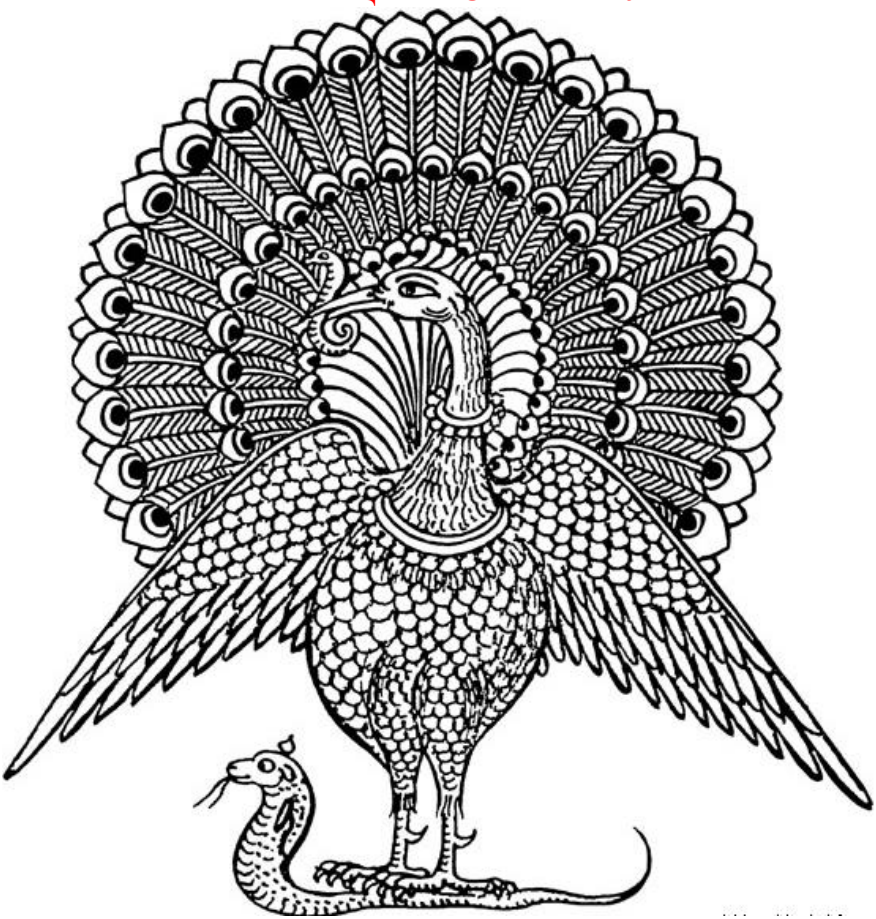

Мне навстречу шел старик. Он нес на плечах прожитые годы. Усталыми, замученными грифами сидели они на сером пальто и мудро глядели по сторонам. И я видела их, как вижу тебя.

Старик под тяжестью ссутулился и с трудом передвигал ноги. Вдруг прожитые годы взметнулись с плеч перепелами. Старик выпрямился, обернулся, узрел кого-то в окне третьего этажа, и лицо его помолодело в доброй улыбке. Там, за занавеской, находился источник его счастья. И это, конечно, была женщина. Он прошел мимо, весь, обернувшись к ней. Кто

был там, за окном? Может быть внучка? Или дочь? Жена? Приятельница? Последняя любовь?

Он скрылся за поворотом.

А птицы прожитых лет еще долго летали в округе и пели от радости. И я слышала их песню, как слышу тебя.

ТЕНЬ

Она любила Его, как облака любят крылья.

Она бежала за Ним, как бежит за нами мысль.

Она не давала проходу, как воздух. И, казалось, нет от Неё спасенья.

Он бежал от неё всю жизнь, пока сил хватало дышать. Но судьба остановила их на крутом повороте тек внезапно, что у него зарябило в глазах.

И Он почувствовал пустоту. Такую тоску чувствует Галактика, раскрутившись в одну нить.

Причина оказалась в Ней. Им завладела Она, пока бежала за Ним. Завладела целиком. И, чтобы забрать Себя, он побежал за Ней, но понял, что Она стала всего лишь тенью. Его Тенью.

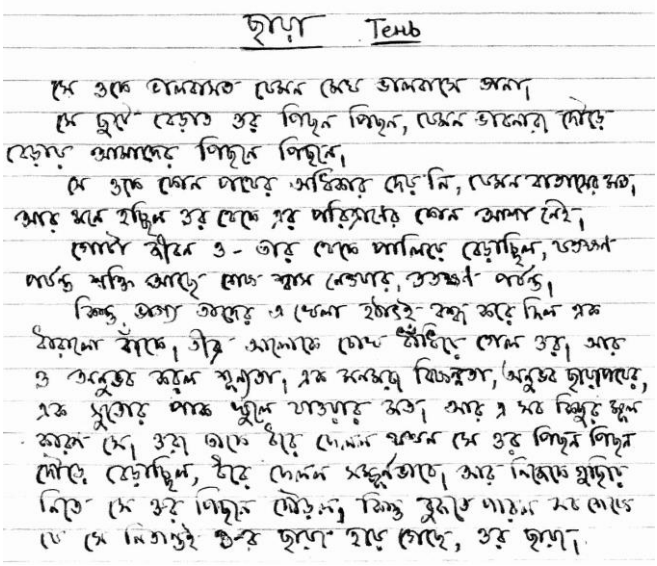

РОДИНА ЦЫГАНА

Умирала мать на девятом этаже белой больницы. Просила в бреду положить ей в руки горсть земли с Родины.

Цыган сидел и думал: где же её Родина? Может быть, город Орджоникидзе? Мать говорила, когда он родился, падал крупный ровный снег, и ветер не колыхал его.

А, может быть, Каспийск? Послать детей, пусть привезут песка с побережья моря-озера?

Нет-нет! Это Курган! Поля-поля… А в подлесках из-под земли сыраны-суханы лезут!

Вздохнул цыган. Всю жизнь мать бродила по свету. Вовсе это не Сибирь, а Подмосковье. Берёзы белые! Запах ландышей и осин после дождя. Ровный ковёр травы, как в Берендеевом царстве.

«Где же её Родина?» - думал цыган. Вспоминал байкальские сопки, подножья которых лижет хрустальная вода. Там, где растут багульник и царские кудри, где шумит тайга кедрами.

Вспоминал Питер, холодный, каменный, строгий. Ветряный Финский залив.

И вдруг осенило его: Родина цыган – Дорога! Где бы ни были они, куда бы не ездили – в памяти оставались то поезда стук, то ржание лошади, то шепот автомобильного колеса.

Спустился цыган вниз, собрал пыль придорожную, поднялся в больницу к матери и вложил её в руки.

-Вот тебе, - молвил, - земля с Родины.

Улыбнулась мать в бреду, точно во сне. Крепко-крепко землю в руках зажала.

На следующий день глаза открыла. А через неделю на ноги встала и забыла болеть.

До сих пор, говорят, живёт. Только бродить не бродит, а жадными глазами на дорогу смотрит.

ত্রিপাঠীর ঝুড়ুলি Pogma Ubbama

ঘুমন্ত মা স্বপ্ন দেখছিলেন সাদা ঘোড়ার হাসপাতাল বাড়িটার সামনে। বিস্ময়স্তব্ধ অবস্থায় তিনি লক্ষ করছিলেন তাঁর হাতে তাঁর ঝুড়ুলির সম্পূর্ণ সাদা।

ত্রিপাঠী বসে বসে ভাবছিল কোথায় তার ঝুড়ুলি? হয়তো বা শুক্লমেনিকিদ্রে, মা বলেছিলেন যখন সে ঘুমোচ্ছিল, তখন এটা সুযোগমতো বাড়িয়ে আর রোগাদের কাছ থেকে ভাড়া নিয়ে নেওয়া যাবে।

অথবা হতে পারে কি স্বয়ম্বিষ্ক? ছেলেদের দাদার সেখানে? তার নিজে আসুক না যদি সত্যসন্ধীদের ঘুমের দাম দেবে।

না- না, কুরপান হতে পারে, ক্লাস্তরের দার ক্লাস্তর... আর রমির সাথে যেতে, এরা খুব্বু সমানের ঘ্রাণ।

ত্রিপাঠী দীর্ঘশ্বাস ফেলল, সারা জীবন মন ঘুরে বেড়িয়েছেন পৃথিবী, না, না, তাহলে সাংঘাতিক নয়, মস্কো পালকা হতে পারে, সাদা বাঘ গাঢ়। উপত্যকার লিলির সৌরভ আর বর্জার পরের অ্যাসালিন ফুলের মুকুন্দ আর হেরে বাদ্যভাঙ্গ অক্ষালের নাম ফাগের পালিয়ের আভিনাদ?

কোথায় তাঁর ঝুড়ুলি? ভাবতে থাকল ত্রিপাঠী, মনে পড়তে থাকল বৈশাখ স্রীদের সকালে গুঁড়ো গুঁড়ো বৃষ্টির পর্বতমালার পাদদেশের কথা, সেই স্কাম, যেখানে রোদ্দুরের আর ক্রাস্ত হোয়ে বসত, সেখানে তাইগা গর্জন ঘরে ত্রিপাঠীর মঞ্চাঙ্গে।

লিলির সুঘ্রাণ ভরে থাকত, শীতল, সাদা, ঘাস ঘুমোলিত ত্রিপাঠীর? হঠাৎই মাথা তুলে গেল, মনে হল তার- হেরে ঝুড়ুলি? ঝুড়ুলি? বড়ই অসুখী! সেখানেই তার চিল, সেখানেই তার পরিস্রমণ করছে—তাদের স্মৃতিতে রয়েছে রোদ্দুরের দুপুরে, অন্যের ঘ্রেষ্ঠাদৃষ্টি আর ঘাড়ির চাকার ত্রিস্পর্শিমান।

শেষে মা ত্রিপাঠী, পাশের ঘরের ট্রলো ঝুড়ি তার তুলে নিল সে, আর, তারপর সোজা চলে গেল সে হাসপাতালে ঘুরে আসা অক্ষয় ঘাসের কাছে, আর ঘাসের ঘাতের ঘুলিয়ে তুলে দিল পাশের ট্রলো ঝুড়ি, সে বলে— এই যে - তোমার ঝুড়ুলি। নাও - বলল সে,

তুল বকতে থাকা মা স্মিত হাসলেন, ঠিক ছেলেবেলা যেন স্বপ্নের মত, হাতের শক্ত মুঠোয় তিনি ধরে রাখলেন তাঁর ঝুড়ি।

পরের দিন, তিনি ফোন তুললেন, আর এক সপ্তাহ পর নিয়ে যাবে ভেবে নিয়ে চলে দাঁড়ালেন, তুলে নিলেন তাঁর চর অনুকূলের ক্ষমা।

আরম্ভে তিনি কথা বলেন, হাসেন, বীথিতে ঘুরে বেড়ান আর ঘুরে বেড়ান পাশের পাশে ঘরের ঘাসে ঘুরে ঘুরিয়ে ঘুরিয়ে ঘোরে।

СКВОЗНЯК

На седьмом этаже небоскреба жила прелестная девушка, которая не догадывалась, насколько она хороша. Долгими вечерами любовалась девушка угасающими отблесками зорь: то розовых, то сиреневых, то лиловых, и в глазах ее отражался пурпур облаков. Она открывала окно и протягивала руки к звездам, и те с радостью садились ей на ладони, смеясь и подмигивая.

На ее подоконнике жили многочисленные цветы, которые радовались, когда девушка поливала их, называла каждого по имени, сама им задавала вопросы, сама же на них отвечала, потому что голос цветов был ей непонятен. Цветы любили, когда ее легкие руки задумчиво порхали над клавишами старенького пианино, а от голоса девушки долго и трепетно вздыхали и росли…росли…

Увидел как-то девушку вездесущий ветерок, по имени Сквозняк, и насмерть влюбился в нее с первого взгляда.

-Ах! – сказал он, - Как хороша! – обернувшись винтом вокруг маленькой фигурки.

-Ох! – воскликнул, - Как удивительна! – играя мягкими кудрями ее русых, вызолоченных последним лучом солнца волос.

-Ух! – выдохнул, Как волшебна! – подслушав стихи, слетавшие с ее милых губ. Но девушка закрыла окно. И Сквозняк бился о форточку всю ночь, изучая каждый вздох, отразивший сон девушки.

Наутро он залетел в комнату снова, сорвал, как мальчишка, с пианино ноты и закружил по комнате.

Девушка не рассердилась, а рассмеялась, ловя непослушные листки бумаги. Сквозняк раздувал ее юбку и рюшки на рукавах, целовал ее лучистые глаза, нежные щеки и блестящие зубы в невинной улыбке…

Несколько цветов, видя такое безобразие, хотели остановить шалуна, ухватили его за фалды развевающегося плаща и, не удержавшись на подоконнике, с дребезгом упали на пол.

-Мои цветы! – воскликнула девушка, закрывая все ходы и выходы для сквозняка.

Но было все равно поздно.

На следующий день девушка заболела. Это была не то Ангина, не то Грипп.

А что вы думали? Что-то путевое могло родиться от Сквозняка?

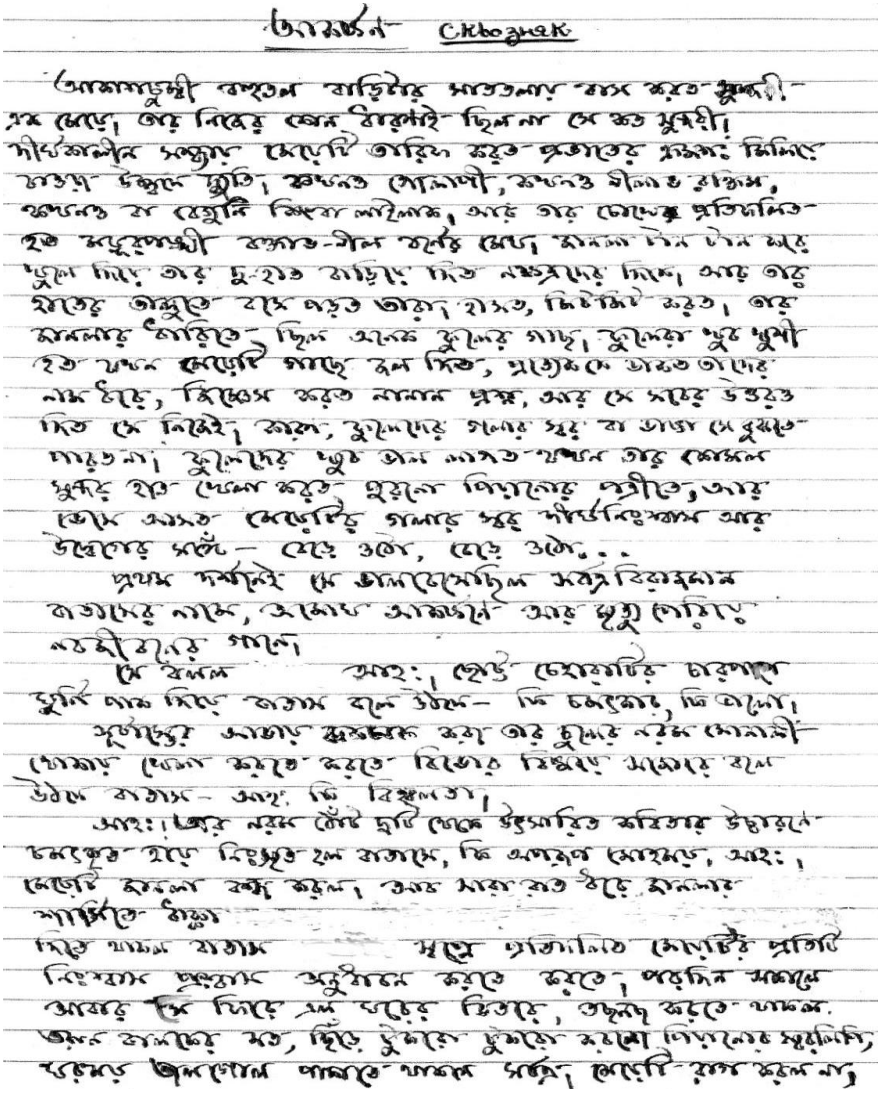

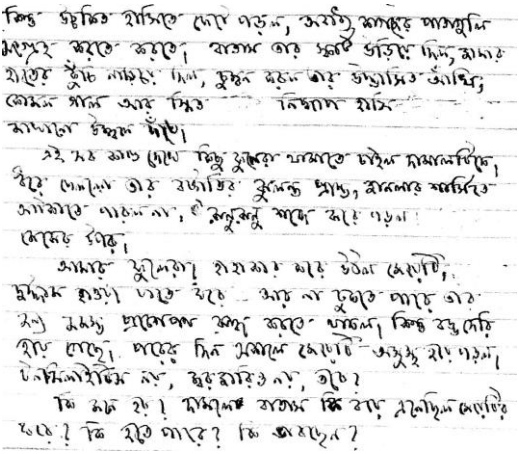

МЕРТВЫЕ ЗЕРКАЛА

Он – живой, умный, добрый. Он попал в королевство кривых зеркал. Мертвых зеркал. Он смотрит куда-то мимо неё. Он видит только её отражение. Кривое отражение в зеркале. Ей хочется закричать: «Я здесь!». Но она молчит. Потому что она – отражение. И ей кажется, что она умерла. Что она – привидение. И он ходит сквозь неё. Думает сквозь неё, дышит…

В его королевстве все ненастоящее, все кривое. То, от чего ему кажется, становится легче, усугубляет боль одиночества, разум не совершенствуется, а деградирует. От сомнительных удовольствий приходит не бодрость, а слабость и болезни. Кажущиеся друзья, своей кажущейся помощью лишь больше затягивают его в водоворот неизбежности.

Там, в его королевстве есть и женщины. Но это не любовь. Все они чего-то от него хотят. Их кривые отражения воруют по частям его деньги, его время, душу. Воруют всерьёз, по-настоящему.

Когда она понимает это, ей хочется разбить кривые зеркала. Но она боится, что их кривые осколки разлетятся по всему свету, и каждый увидит, какой он там, в кривом зеркале.

Поэтому он должен обязательно однажды заглянуть в нормальное зеркало. Это её глаза. Потому что она живая, как и он. Потому что она любит его, как себя.

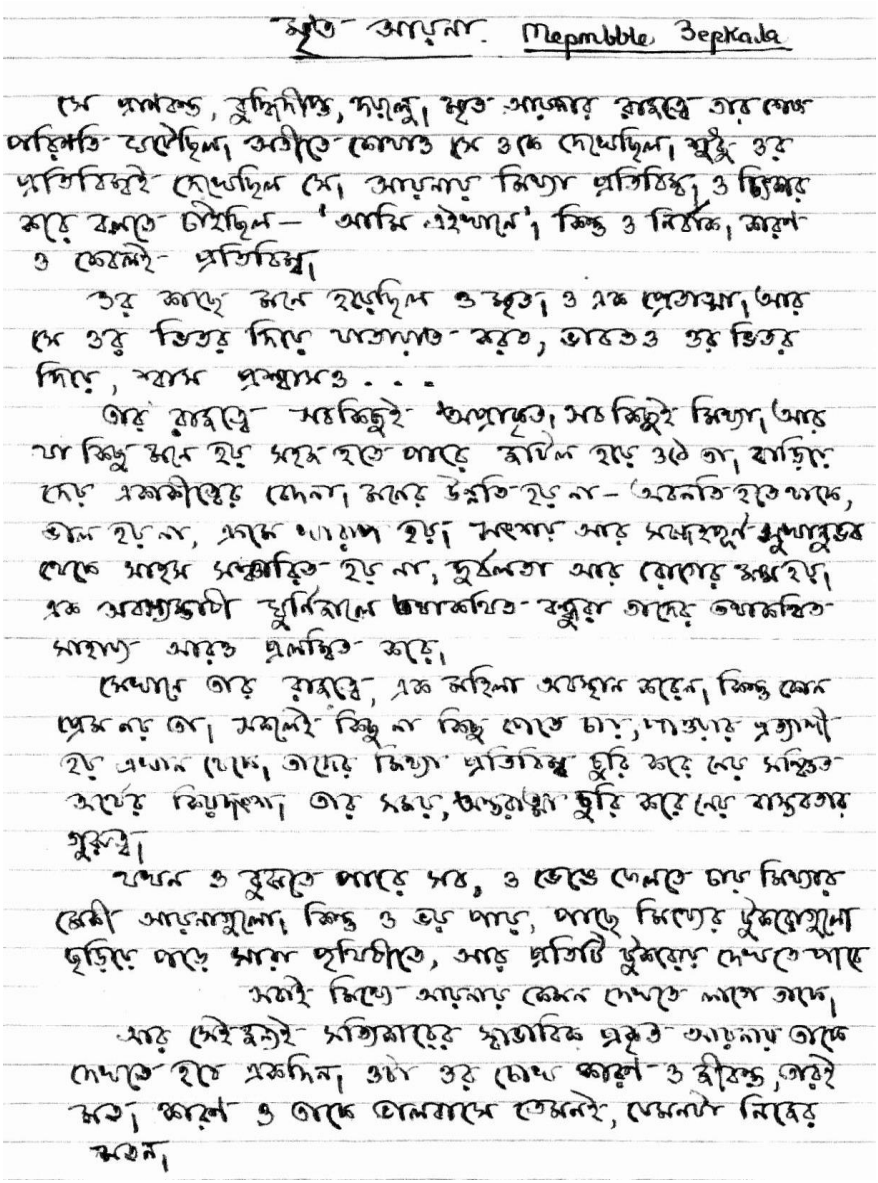

ОБЛАКА

Они дарили друг другу…облака.

У обоих были фотоаппараты. Их коллекция состояла из нескольких альбомов и десятка два больших фотографий в рамках, развешанных по стенам.

Они везли их отовсюду: с замшелой по весне Чукотки, туманного Чопа, с ветряного Забайкалья, с теплых и частых озер Сибири. Облака были совершенно разные, невероятные, радужные, сказочные…

Однажды супруги поругались. Из-за мелочей. И разошлись.

Светлана убрала со стен облака и закинула их сгоряча за диван. А Валерий, глядя на это, хлопнул дверью, разбил о ступеньки фотоаппарат и решил больше никогда, никогда…

Валерий очень скоро сошелся с другой женщиной. Светлана же еще пару лет загружала себя работой, чтобы его забыть. Наконец, и она нашла себе нового спутника жизни.

Проходили годы. Пустые. Бездарные. И бездушные. Иногда они смотрели на небо, но с досадой отводили взгляд. А по ночам им снились …облака.

Он не выдержал первым и, купив в магазине акварель, начал рисовать. Валерий все хотел изобразить то, самое первое облако, с чего все началось. Они со Светланой не успели его когда-то сфотографировать и часто вспоминали в свои лучшие дни.

Душа его разрывалась от спокойствия и благополучия. Он искал в небе ответ, выходя по вечерам в открытое поле. За рыхлыми тучами, беременными дождем, легкие перистые подкрылки, точно прочтя мысли Валерия, либо прятались за эти темные тучи, либо улетали еще выше в небо, убегая от безнадежности его мыслей, не в силах помочь. Слишком нежные и слабые, чтобы справиться с болью, поселившейся в человеке, они не находили в себе столько божественной силы, сколько было в том первом облаке, с которого все началось.

Валерий ждал его и звал. И однажды поздно ночью оно получилось. Прозрачное, розовое, точно небесный цветок, решивший еще раз раскрыться, облако растеклось само на огромном ватмане, расстеленном по всей кухне, точно движение души. Пока это розовое чудо сохло на полу, Валерий прыгал вокруг, как мальчишка, зажав зубами крик радости. Получилось! Первый раз в жизни! Получилось!

Осторожно Валерий поцеловал в лоб спящую женщину, которая жила с ним все эти годы, свернул в трубочку ватман и тихонько закрыл дверь.

Ему отворил мужчина.

- Вам кого?

- Её.

А она уже стояла у порога, изумленно раскрыв глаза.

-Оно? – взволнованно развернул на весь пролет лестницы Валерий свое розовое облако.

- Да – улыбнулась Светлана…

… Они долго лежали на траве, обнявшись, и глядя на фиолетовые перья гигантских крыльев, порхающих среди звезд.

-Фотоаппарат не возьмет. Может, заснять на кинопленку? – спросила Светлана.

- Я не могу без тебя жить, - ответил Валерий.

মেঘ Oblaka

ওরা দাম্পত্যকে উপহার দিয়েছিল— মেঘ।

ওদের দু-জনেরই ক্যামেরা ছিল, ওদের অস্ত্রাগারে ছিল বেশ কয়েকটা ট্রাইপড আর ডজন দুয়েক বড় বড় ছবি, ফ্রেমে বাঁধানো, দেওয়ালে ঝোলানো।

ওরা ঘুরে বেড়াত— বসন্তে শ্যাওলায় ঢাকা চুনোপাথর, গ্রীষ্মের ঝোড়ো বেলা, কোড়ো বেলা অস্তাচল বা সমুদ্রের প্রান্তরেখাই দেখতে পাওয়া উচ্চ স্তরের জীব। মেঘের মধ্যে সঙ্কুল অন্ধকারের প্রকোষ্ঠেই আলাদা আলাদা ভিন্ন ধরনের, অরেলনীড় কিলোমিটার, দুধির মতো শুভ্র জ্যোতির্ময়, ফুলকপির পাঁপড়ির মতো,

একবার ওদের ঝগড়া হল, দুটিই সামান্য কিছু নিয়ে অবশ্যই, আর ওরা দু-দিন আলাদা ঘরে শোল।

প্রথম রাতে স্ট্রেটোনাস দেওয়ালে হেলে বসে দিনে খুলে রেখে আসা ঘড়ির মেকেড়, ফোলার ফিতুল, বই দেখে আলোর কয়েক বক্স করে দিয়ে, সিঁড়িতে আড়ুয়ে ভেঙে দেলল ক্যামেরা, আর চিৎকার করল— না না না আর কখনও না।

পরের খুব শীতগিরিই ভালোরি আবার হল আবার প্রত্যুষ ঝটিকার প্রতি, ভালোরি পুরোপুরি ভুলতে ভোর স্ট্রেটোনাস আরও কয়েক বছর ঘুরে কুইল নিয়ের কাছে নিয়ে, কেউ পারল সে-ও খুঁজে পেল এক অন্য রীতিসঙ্গী।

কয়েকের পর বছর ঘুরে গেল, শূন্য, বিচ্ছিন্ন আর ক্লান্তিহীন, কখনও মেঘনও ওরা আলাদা আলাদা ঘরে ভোর ভোর তাকত আকাশের দিকে, কিন্তু গভীর নিরাশায় দৃষ্টি সরিয়ে নিত; আর রাত্রিতে ওরা স্বপ্ন দেখত — মেঘের।

আর একটুতে পারেনি ভালোরি, ফোলার ভেঙে ফিল আনা স্কলকন্ত দিয়ে আঁকতে সুরু করল সে, ভালোরি আঁকাতে ভোর করল ওদের প্রথম মেঘ— যা থেকে সুরু হয়েছিল ওদের সব কিছু, সেই মেঘ— যা ওরা ক্যামেরায় ধরতে পারে নি একবারও, যা নিয়ে ওরা স্মৃতির সরণীতে ফিরে যেত ওদের শ্রেষ্ঠ দিনগুলোতে।

সুখ আর শান্তির নিরাপত্তায় ভেরা ধীরনে তার মনের গভীরে তোলপাড় তুলিল, ফিরোরল ছড়িয়ে ছিটিয়ে ফাঁদে, আলোকের দিকে তাকিয়ে সে ঈশ্বর খুঁজতে চাইছিল, সন্ধ্যায় খোলা মাঠে,

আলোর পিছনে হাতের প্রত্যাশী মোড়ো রেখে, অথবা হালকা পদক্ষেপে ঘুত রেখে আলেয়ির ভাবনা কিছু কিছু বুঝতে পারছিল। হাই বিজ্ঞ আলো মোড়ো মেয়ের পিছনে লুকিয়ে বুঝেছে, অথবা আরো উঁচুতে ভাড় বেড়ানো মেয়ের সাথে — পালিয়ে মোড়ো আলেয়ির দুরাশার ব্যাপারে কোন সাহায্যই করতে পারছিল না তারা। মা, বাবা, ভাই আর দুষ্টু মেয়েরা, সকল মানুষের ক্ষুদ্রাদপি ক্ষুদ্র স্বার্থের মেলার উপরে করার মত কোনো দৈব শক্তির অধিকারী নিজেরাই হতে পারছিল না, তা ছিল প্রথম মেয়ের জন্যে, আর যা দেখে শুরু হয়েছিল সব কিছু।

আলেয়ি আলোকে করছিল তার জন্য, আর কামনা করছিল তা, আর প্রকৃতির গভীর রাতে — তা হলো, দীর্ঘ পোশাকী, নীল ফুলের মত মেয়ে সমস্ত মোড়ক খুলে ছড়িয়ে পড়ল গোটা রান্নাঘরে — মস্ত, মুহূর্তে বিদ্যুৎ হয়ে উঠল অন্ধকার।

কিন্তু মুহূর্ত গড়াগড়ি খেতে খেতে আলেয়ির পোষা ঘর ছুড়ে, আলেয়ি আর ইউজিনের তাঁর খাওয়া শেষ করে ফেলে ফেলল, উঠোনে মশা ভর্তি — পোড়ো — ঘাসে — ঝিঁঝির প্রথমবার সফর হয়েছে।

ছুরিকে নাড়ির ফাঁসের সর্তপনে ছুটুন করল আলেয়ি, যিনি তার পাশে ঢুকিয়ে আর নক্সাকার পোশাক টুকিয়ে নিয়ে আস্তে ধীরে মিল দরজা।

পোশাক দরকার ফুলল,
আজে চলুন আপনার?

3-ে,
ইউজিনই দরজার দাঁড়িয়ে পড়েছে। মেতলানা বিস্ফারিত নিশ্চল চোখে, কইলো? উত্তেজিত আলেয়ি পোশে সিঁড়ি ছুঁয়ে ছুটিয়ে দিল তার পোশাকী মেয়ে, ... দীর্ঘক্ষন-দীর্ঘ পরস্পরকে ঝুলিয়ে দীর্ঘ চোখ তাকে কইল পাশের উঠোন, আর অবিশ্যি দইল তারাদের মাঝে উঠে যেতানো বিশাল আনার যেমনি পালঙ্কের দিকে।

ক্যাপ্টেন চিন্তে পারল না তা, দিলেন কি ঝিরি যায়?
জিজ্ঞেস করল মেতলানা,
আমি বাঁচব না তোমাদে ছাড়ে — আলেয়ি উত্তর দিল।

БАБОЧКА

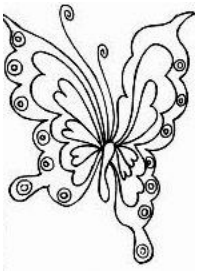

За столом в душной комнате сидел ученый, который вот уже много лет выводил и не мог вывести формулу, очень нужную для науки.

Он открыл форточку, и в комнату вмиг залетела необычайно красивая бабочка.

Ученый замер на месте от неожиданности.

Детской мыслью мелькнуло - поймать бабочку. Но он тут же подумал, что бархатные трепетные крылышки прекрасны только тогда, когда до них не дотрагивается рука человека. Тогда он решил приколоть это чудо природы булавкой к стене. Но, подойдя ближе замер от восхищения, и открыв пошире окно:

- Лети! - сказал он ей, - лети скорей на волю. Сигаретный дым и затхлая лачуга старого безумца не для таких, как ты...

Но бабочка не торопилась. Она присела на краешек стула и превратилась в улыбающуюся искристыми глазами фею весеннего леса. Комната вмиг наполнилась свежими ароматами фиалок и сон-травы. Исчезла пыль на полках с книгами, а корешки томов стали ярче. Мрамором засиял пол, а потолки и стены раскрасились нежно-зеленой мозаикой, вылепленной листьями хмеля из прозрачного стекла. Все вещи остались теми же, но и совсем другими, точно умытыми после дождя и высушенными теплыми лучами солнца.

- Не для таких, как я? - провела руками фея над бумагами, раскинутыми по столу, засмеялась звонко, как серебряный колокольчик, взмахнула крылышками, и бабочкой выпорхнула в окно. Ученый обнаружил на листе бумаги ту самую формулу, которую выводил много лет. Но он еще не верил своему счастью, потому что долго звучал в нем камертоном мелодичный смех.

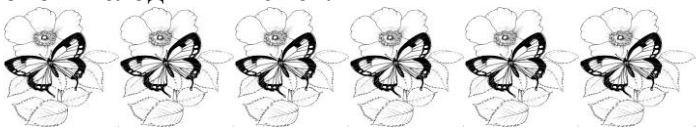

প্রজাপতি Бабочка

গুমোট এক ঘরে এক টেবিলের ধারে বসে এক বিজ্ঞানী অনেককাল ধরে চেষ্টা চালিয়ে যাচ্ছিলেন বিজ্ঞানের প্রয়োজনে এক গবেষণার এক সঙ্কেত সূত্র খুঁজে বার করতে। আর কিছুতেই তা পারছিলে না। সূর্যালোক আসার জন্য ঘরের ছাদের কাছের জানলা তিনি খুলতেই ঘরের মধ্যে উড়ে এল এক অনিন্দ্য সুন্দর অনুপম প্রজাপতি। বিজ্ঞানী তাঁর আসনে অবাক বিস্ময়ে বিমূঢ় হয়ে গেলেন। এক শিশু-সুলভ চিন্তায় আবিষ্ট হলেন তিনি — ধরতে চাইলেন প্রজাপতিটিকে। পরক্ষণেই তাঁর মনে হল যে, মখমল তুল্য স্পন্দিত পাখনাগুলি বড় চমৎকার লাগে যতক্ষণ পর্যন্ত তাতে মানুষের হাতের স্পর্শ না লাগে। আবার তিনি মনে করলেন, প্রকৃতির এই অত্যাশ্চর্য সৃষ্টিটিকে দেওয়ালে পিন বিদ্ধ করে গেঁথে রাখতে। কিন্তু প্রজাপতিটির কাছাকাছি যেতেই সৌন্দর্যের বিমুগ্ধতায় বিস্ময়াবিষ্ট হয়ে খুলে দিলেন জানলা বিস্তৃত করে। উড়ে যাও — তিনি বললেন প্রজাপতিটিকে। যাও শীগগির উড়ে যাও মুক্ত হয়ে। সিগারেটের ধোঁয়া আর পাগলাটে ফ্যাপামি তোমার জন্য নয়।

কিন্তু প্রজাপতির কোন হেলদোল নেই। চেয়ারের প্রান্তে বসে সে ঘুরে তাকিয়ে রইল বসন্ত বনের ঝকমকে স্বপ্নস্থল পরীর হাসি হাসি চোখের দিকে। সহসা ঘরটা ভরে উঠল ভায়োলেট আর নিদ্রালতা ফুলের টাটকা সৌরভে। বইসমেত বইয়ের তাকে জমে থাকা সবধুলো উবে গেল। বইগুলোর মলাট ঝকমকে আর উজ্জ্বল হয়ে উঠল। ঘরের সংকর্মরের মেঝে আর কড়ি-বরগার ছাদের ভিতরের দিকে আর দেওয়ালে ক্যামেলিয়ার পাতার মতন বিবর্ণ সবুজ মোজাইক, কাচের মত স্বচ্ছ আর চকমকে হয়ে উঠল। সবকিছুই আগের মত রয়েছে, অথচ আগের থেকে স্বতন্ত্র, যেন সদ্য হয়ে যাওয়া বৃষ্টিতে ধোঁয়া হয়েছে আর সূর্যের উষ্ণ কিরণে শুকিয়ে নেওয়া হয়েছে।

আমার মত লোকেদের জন্য নয়? টেবিলের উপর ছড়িয়ে থাকা কাগজের গায়ে পরীর হাতের ছোঁয়া। রূপোর ঘণ্টা-ধ্বনির মত হেসে উঠলেন বিজ্ঞানী, আর জানলা দিয়ে ডানা মেলে উড়ে গেল প্রজাপতি।

এক টুকরো কাগজ খুঁজে পেলেন বিজ্ঞানী, যাতে রয়েছে সেই সঙ্কেত সূত্র যা এতকাল ধরে তিনি চেষ্টা করছিলেন খুঁজে পেতে। কিন্তু এখনও তিনি তাঁর সৌভাগ্যে বিশ্বাসী হতে পারছিলেন না। আর দীর্ঘদিন ধরে নিষ্কুপ সুর বাঁধার যন্ত্র স্বর্ণশূল বেজে উঠছিল এক সুখশ্রাব্য অট্টহাস্য।

БЫЛЬЁ

Я пришла на край света, утирая слезы. На вершине обрыва стояла древняя старуха, широко раскинув руки. В один рукав влетали ветры, неся с собой пылинки, семена и камни и, вылетев из другого, скрывались в неизвестном направлении.

Я подошла к ней. Женщина не посмотрела на меня, лишь слегка шевельнула бровью.

- У меня сгорел дом, - сказала я.

- Я знаю, - ответила старуха.

- Я хочу уйти от своего одиночества.

- Я знаю, - не моргнув глазом, повторила старуха.

- Кто ты? – спросила я.

- Ты знаешь…

Я опешила.

Внимательно глядя на нее, и ничего не зная и не понимая на самом деле, я принялась анализировать. Что означают эти ветры? Семена? Эти тысячи сконцентрированных коротких жизней, улетающих в разные стороны по всему свету? Это быльё? Не от того ли все быльем порастает? И эти камни… Время – разбрасывать камни… и время – собирать камни… Эта старуха – Время?

Старуха, улыбнувшись, сказала:

- Да.

Она читала мои мысли. Царственно развернув голову, старуха глянула мне прямо в глаза, и от этого я превратилась в маленькую песчинку. Меня тут же подхватил волшебный ветер, и я, влетев в левый рукав времени, вылетела из правого. Теперь я могла различать быльё. Летая по свету, я видела, кому Время дарило розы, кому семена ромашки, другим доставались васильки и лютики. Мое пепелище поросло крапивой.

Сделав круг, я вернулась на край света, представ перед старухой в прежнем виде.

- Ну что, ушла от одиночества? - спросила Время, и тут же сама ответила, - Нет!

Я не знала, что сказать, и опустила глаза в землю, чтобы снова не превратиться в песчинку.

- Вспомни о том, кто поверил в тебя. И возвращайся. Тебе еще не время…

И я вернулась.

বিস্মৃতির অতলে Быльё

সমস্ত জগৎ ঘুরে আমি এসে দাঁড়ালাম পৃথিবীর প্রান্তসীমায়, যেখানে টুকরো টাকরার স্তূপের উপর দু-হাত বিস্তৃত করে দাঁড়িয়ে রয়েছেন এক প্রাচীন মহিলা। তাঁর এক হাতে বাতাস ভরে দিচ্ছে মাটি আর ধূলিকণা, বীজ আর পাথর; আর তা বেরিয়ে যাচ্ছে তাঁরই অপর হাত দিয়ে এক অজানা কিনারার দিকে। আমি তাঁর সমীপবর্তী হলাম, তিনি আমার দিকে তাকালেন, সামান্য আন্দোলিত হল তাঁর ভ্রূ যুগল।

আমি বললাম — আমার বাড়ি পুড়ে গেছে।

তিনি উত্তর দিলেন — আমি জানি।

আমি আমার একাকীত্ব থেকে পরিত্রাণ পেতে চাই।

প্রাচীনা আবার উত্তর দিলেন সরাসরি মুখোমুখি — আমি জানি।

আমি জিজ্ঞেস করলাম — কে আপনি?

তুমি জান...

আমি স্তম্ভিত হয়ে গেলাম, মন দিয়ে তাঁকে দেখতে দেখতে, কিছু না বুঝে না জেনেই বুঝবার চেষ্টা করতে চাইলাম, এই কথাগুলোর অর্থ কী? কি মানে হতে পারে এই বীজের, এই শত সহস্র ভস্মীভূত জীবনের মত অঙ্কুরিত বীজেদের বসুন্ধরায় ছড়িয়ে যাওয়ার? এরা কি বিস্মৃতির অতলে নিঃশেষে সমাহিত হয়ে যাচ্ছে? আর এই পাথরেরা... সময়... পাথর ছড়িয়ে দেওয়া... আর সময়... সংগ্রহ করা পাথর... এই প্রাচীনা... সময়?

হাসি ছড়িয়ে প্রাচীনা বললেন — হ্যাঁ তো।

তিনি আমার ভাবনা পড়তে পেরেছিলেন, অভিজ্ঞ ভঙ্গিতে মাথাটা ঘুরিয়ে প্রাচীনা আমার চোখের দিকে চাইলেন সরাসরি, আর আমি রূপান্তরিত হয়ে গেলাম ক্ষুদ্র এক বালুকণায়। আমাকে তৎক্ষণাৎ তুলে নিল ক্ষুদ্র বাতাস, আর আমি সকলের বাঁ হাত দিয়ে প্রবেশ করে ডান হাত দিয়ে বেরিয়ে গেলাম। এখন আমি বুঝতে পারলাম, বিশ্লেষণ করতে পারলাম স্মরণ-বিস্মরণকে, পৃথিবীতে উড়তে উড়তে আমি দেখতে পেলাম সময় কাদের উপহার দিচ্ছে গোলাপ, কাদের ডেইজি, কাদের জন্যই বা ঝড় আর কাদের সোনালী কুমকোলতা। আমার ভিটে আর বাড়ি ভুলে গেছিল আমাদের বিচ্যুতির উত্থান হওয়ার কথা।

Литературно-художественное издание
международный проект
ЭНЦИКЛОПЕДИЯ ЗОЛОТОГО ПЕРА
Светлана Савицкая
Притчи «Город Домов и Город рамов»
В авторской редакции

СОДЕРЖАНИЕ:

Стр. 4 Седые косы
Стр. 5 Накомодные слоники
Стр. 12 Город храмов и Город Домов
Стр. 15 Жемчужные Бусы
Стр. 17 Дети Воров
Стр. 19 Взятка
Стр. 22 Вилка
Стр. 24 Человек
Стр. 26 Дерево
Стр. 27 Деревянная Верность
Стр. 29 Мудрые Мысли
Стр. 31 Воробей и Солнце
Стр. 33 Пустой Орех
Стр. 36 Ангел и Демон
Стр. 38 Антония
Стр. 40 Птицы прожитых лет
Стр. 42 Тень
Стр. 43 Родина цыгана
Стр. 45 Сквозняк
Стр. 47 Мертвые зеркала
Стр. 49 Облака
Стр. 53 Бабочка
Стр. 55 Былье

Перевод **Мадхаби Бхатачарья, Гаутам Гош**

Подписано в печать 14.02. 2014 г.
Формат 60х90/32. Усл.п.л. 8,45.
Тираж 2000 экз. Заказ № К-1098.

Издательский Дом «Золотое Перо»
Москва ул. Большая Никитская д. 53
Сайт www.perorusi.ru
8-916-161-60-23 bux67@yandex.ru

Отпечатано в типографии АРГО